ऋग्०
ओ३म्
यजु०
पञ्चमहायज्ञ वाणी
यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म
ऋग्वेद
यजुर्वेद
सामवेद
सामम०
डॉ० कर्णदेव आर्य शास्त्री
अथर्व०

ओ३म्

पञ्चमहायज्ञ वाणी

के

द्वितीय संस्करण की प्रेरणास्त्रोत
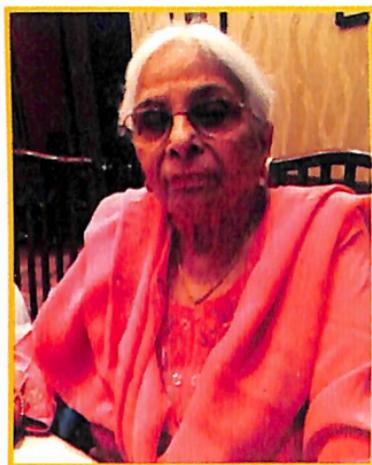
पूज्या माता श्रीमती जनक बहल जी

जिनकी प्रेरणा से पञ्चमहायज्ञ वाणी का द्वितीय संस्करण आप के हाथों में है। माता जी प्रभुभक्त एवं स्वाध्यायशील हैं। ईश्वर उन्हें स्वस्थ दीर्घायु प्रदान करें तथा उनका आशीर्वाद सम्पूर्ण परिवार पर बना रहे। यही प्रभु से विनती है।

—बहल परिवार

॥ ओ३म् ॥

पञ्चमहायज्ञ वाणी

सम्पादक

डॉ० कर्णदेव आर्य शास्त्री

18 अक्तूबर, 2015

द्वितीय संस्करण

सौजन्य

श्री अश्विनी बहल

एवं

श्रीमती अनुराधा बहल

99 C, सैनिक फार्म ईस्टर्न एवेन्यू, नई दिल्ली-62

चलभाष- 9811033365

॥ ओ३म् ॥

अपनी बात

श्रीप्रेमकिशन बहल

प्रस्तुत पुस्तक पञ्चमहायज्ञ वाणी श्रद्धेय **श्री प्रेमकिशन बहल** जिनका जन्म श्रीमती ईश्वरदेवी बहल एवं श्री राजकिशन बहल के घर में दिनांक 20 फरवरी 1918 को दिल्ली में हुआ तथा निधन 18 अक्तूबर 2009 को हुआ। उनकी स्मृति में उनके याज्ञिक पुत्र श्री अश्विनी बहल एवं धर्मपत्नी श्रीमती अनुराधा बहल ने सभी यज्ञ प्रेमियों के लिए प्रस्तुत करायी है । श्री अश्विनी बहल जी पूज्या माता श्रीमती जनक बहल पुत्र वैभव बहल एवं सुश्री पुत्री वाणी बहल के साथ 15 वर्षों से प्रतिदिन यज्ञ कर रहे हैं । समय-समय पर सम्पूर्ण बहल परिवार यज्ञ में भाग लेता है । यज्ञ में भाग क्यों न ले क्योंकि यज्ञ से मानसिक शान्ति एवं परिवार में सुख समृद्धि तथा पवित्र वातावरण बनता है । श्रेष्ठ विचारों का प्रादुर्भाव तथा श्रेष्ठ बुद्धि का विकास होता है । जब श्रेष्ठतम बुद्धि का विकास होता है तो सात्त्विक कार्यों का भी उद्‌गम प्रारम्भ होने लगता है । जो भी मानव सुख शान्ति की कामना चाहता है उसे प्रतिदिन निःस्वार्थ भाव से पञ्चमहायज्ञ करने चाहिए, जो कि इस पुस्तक में लिखे गए हैं । ब्राह्मण ग्रन्थ में आता है—स्वर्गकामो यजेत्—अर्थात् स्वर्ग (सुख विशेष) की इच्छा करने वालों को यज्ञ करना चाहिए । ईश्वर की पवित्र वेदवाणी कहती है—**यथेमां वाचं कल्याणी मावदानि जनेभ्यः** । ईश्वर ने कल्याण करने वाली वेदवाणी सब मनुष्यों की भलाई के लिए ही दी है जिनसे मानव यज्ञादि शुभ कार्य कर सकते हैं । वेदवाणी ही मनुष्य के अन्तःकरण को पवित्र करती है क्योंकि वेद ईश्वरीय ज्ञान है जिसमें किसी भी प्रकार का परिवर्तन नहीं किया जा सकता। यज्ञ की महत्ता का जहां वेदों में विशद वर्णन है वहीं रामायण

एवं गीता में भी विशेष महत्त्व दिया गया है । जिस घर-परिवार-समाज में स्वाहा-स्वधा की ध्वनि एवं वेद की ऋचाओं का पठन पाठन होता हो वह घर परिवार सौभाग्यशाली होता है । वातावरण सुगन्धमय बनता है । प्रभु अपनी कृपा की वृष्टि करते हैं । संस्कारविधि में महर्षि दयानन्द जी लिखते हैं कि यज्ञ का देश पवित्र अर्थात् जहां स्थल, वायु शुद्ध हो किसी प्रकार का उपद्रव न हो । श्री बहल जी की यज्ञशाला भी ऐसे ही पवित्र स्थल पर है जहां का वातावरण सुरम्य एवं सुगन्धमय है । जहां विशेष अवसरों पर श्री अनिल बहल धर्मपत्नी श्रीमती अनु बहल पुत्रियाँ मृदुला (नीना) कपूर धर्मपत्नी श्री जवाहरलाल कपूर, मंजु मानकतला धर्मपत्नी स्व० श्री सुबोध मानकतला तथा रीता मानकतला धर्मपत्नी श्री प्रदीप मानकतला पौत्र-प्रणय बहल धर्मपत्नी श्रीमती अमीषा बहल, पौत्रियां प्रेरणा धर्मपत्नी प्रशान्त खन्ना एवं सुश्री वाणी बहल अपने-अपने व्यापार आदि कार्यों को करते हुए भी यज्ञ में समय-समय पर बैठते हैं । यह समस्त परिवार पूज्य पिताजी के सद्विचारों एवं सद्गुणों को जीवन में धारण कर उनके नाम को रोशन करने वाला बने यही प्रभु से प्रार्थना है। पञ्चमहायज्ञ वाणी में प्रतिदिन तथा विशेष यज्ञ का संकलन है । वहीं विभिन्न पद्धतियों का भी संक्षिप्त में समावेश किया गया है । पुस्तक में किसी भी प्रकार की त्रुटि के लिए क्षमाप्रार्थी हूं । आशा है यज्ञप्रेमी इसका लाभ जरूर उठायेंगे तथा **किसी भी प्रकार के यज्ञ एवं संस्कारों के लिए सम्पर्क कर सेवा का अवसर प्रदान करेंगे ।**

इन्हीं शुभकामनाओं के साथ :—

धर्माचार्य

—डॉ० कर्णदेव आर्य शास्त्री

आर्यसमाज 15 हनुमान रोड नई दिल्ली

दूरभाष-09810322989, 09818555863

E-mail : acharyakaran.shastri@gmail.com

f : shastri.karandev

स्थापित : 1908
रजिस्टर्ड : 1114

ओ३म्

E-mail : aryasabha@yahoo.com
Website : www.sarvadeshik.com
तार : सार्वदेशिक (sarvadeshik)
दूरभाष एवं फैक्स : 011-23360150

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
Sarvadeshik Arya Pratinidhi Sabha
(International Aryan League)

3/5, महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली-110002
कैम्प कार्यालय-15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001 टेलीफैक्स : 011-23360150, 23365959

संख्या...875/15 दिनांक....31/10/2015

शुभ सन्देश

डॉ० कर्णदेव जी द्वारा सम्पादित पञ्चमहायज्ञ वाणी (द्वितीय संस्करण) समस्त मानवमात्र के लिए एक शुभ प्रेरणा है । मानव जीवन का उद्देश्य सुख प्राप्ति है । किन्तु ज़ब सुख बाहरी और आन्तरिक, दोनों प्राप्त होते हैं तभी पूर्ण सुख होता है । ऐसा सुख पञ्चमहायज्ञ के द्वारा ही सम्भव है अन्यत्र कहीं नहीं । इसलिए इस कार्य को पवित्र कर्म श्रेष्ठतम कर्म कहा गया है । अतः यज्ञ से यजमान की सब श्रेष्ठ कामनाएं पूर्ण होती हैं ।

प्रेरणास्पद इस पुस्तक के माध्यम से अनेक व्यक्तियों को जीवनोत्थान एवं परोपकार की प्रेरणा मिलेगी । व्यक्ति, परिवार, प्राणिमात्र एवं इंश्वर के प्रति पूर्ण कर्तव्य बोध होगा । जीवन सरस, सरल, सुगन्धित होगा—ऐसा विश्वास है ।

दानों में विद्यादान सर्वोत्तम दान माना गया है । धनों में भी कहा गया है **"विद्या धनं सर्व धन प्रधानं"** । इसलिए बहल परिवार का इस कल्याणकारी, परोपकारी कार्य के लिए प्राप्त सहयोग भी सराहनीय है । समस्त बेहल परिवार भी साधुवाद का पात्र है ।

डॉ० कर्णदेव जी को इस हेतु हार्दिक बधाई ! परमात्मा उनके इस पुरुषार्थ और भावनाओं को सार्थकता प्रदान करे । इत्योम् ।

भवदीय :
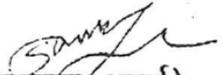
(प्रकाश आर्य)
सभा मन्त्री
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली

Regn. No. S - 8149/1976
Email : aryasabha@yahoo.com
Website : delhisabha.org

☎ २३३६०१५०
२३३६५१५९
IVRS : 011-23488888

❀ ओ३म् ❀

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं०)

The Delhi Arya Pratinidhi Sabha

१५-हनुमान् रोड, नई दिल्ली - ११०००१

क्रमांक : दिल्ली सभा 2015-16/1000-47 दिनांक : 28 अक्टूबर 2015

शुभकामना सन्देश

यह जानकर हर्ष हो रहा है कि **डॉ० कर्णदेव आर्य शास्त्री जी** के सम्पादन में वैदिक संस्कारों का वर्णन करने वाली पुस्तक **'पञ्चमहायज्ञ वाणी'** की रचना की गयी है। यह पुस्तक समस्त आर्य जगत् के लिए बहु उपयोगी सिद्ध होगी क्योंकि इसके अन्दर उन सभी पद्धतियों का वर्णन किया गया है जो जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में उपयोगी हैं।

यदि इस पुस्तक को पढ़कर कोई व्यक्ति अपने जीवन को यज्ञमय बनाता है तो इस पुस्तक का प्रकाशन सार्थक होगा।

पुस्तक प्रकाशन के लिए मैं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ।

भवदीय,

(धर्मपाल आर्य)
प्रधान
मो० 09810061763

Regn. No. S - 8149/1976
Email : aryasabha@yahoo.com
Website : delhisabha.org

२३३६०१५०
२३३६५९५९
IVRS : 011-23488888

❀ ओ३म् ❀

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं०)

The Delhi Arya Pratinidhi Sabha

१५-हनुमान् रोड, नई दिल्ली - ११०००१

क्रमांक : दिल्ली सभा 2015-16/1000-48   दिनांक : 28 अक्टूबर 2015

शुभकामना सन्देश

डॉ० कर्णदेव आर्य शास्त्री जी के सम्पादन मे **'पञ्चमहायज्ञ वाणी'** पुस्तक प्रकाशित होना आर्य जगत् के लिए गरिमामयी कार्य है। यह पुस्तक आर्य जनों के लिए तो उपयोगी है ही, यदि कोई व्यक्ति इस वैदिक पद्धतियों से सुशोभित, सारगर्भित पुस्तक को पढ़कर अपने अन्तःकरण में स्थापित कर स्वयं के जीवन को यज्ञ के प्रति समर्पित करता है तो पुस्तक का प्रकाशन सार्थक होगा।

पुस्तक प्रकाशन के लिए मैं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ।

भवदीय,

(विनय आर्य)
महामन्त्री
मो० 09958174441

अनुक्रमणिका

प्रार्थना

हे सर्वाधार, सर्वान्तर्यामिन् परमेश्वर ! आप अनन्त काल से अपने उपकारों की वर्षा किये जाते हो। प्राणिमात्र की सम्पूर्ण कामनाओं को तुम्हीं प्रतिक्षण पूर्ण करते हो । हमारे लिए जो कुछ शुभ है तथा हितकर है उसे तुम बिना माँगे ही स्वयं हमारी झोली में डालते जाते हो । तुम्हारे आँचल में अविचल शान्ति तथा आनन्द का वास है । तुम्हारी चरण-शरण की शीतल छाया में परम तृप्ति है । शाश्वत सुख की उपलब्धि है तथा सब अभिलषित पदार्थों की प्राप्ति है ।

हे जगत्पिता परमेश्वर ! हम में सच्ची श्रद्धा तथा विश्वास हो। हम तुम्हारी अमृतमयी गोद में बैठने के अधिकारी बनें। अन्तःकरण को मलिन बनाने वाली स्वार्थ तथा संकीर्णता की सब क्षुद्र भावनाओं से हम ऊँचे उठें। काम, क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या, द्वेष इत्यादि कुटिल भावनाओं तथा सब मलिन वासनाओं को हम दूर करें । अपने हृदय की आसुरी प्रवृत्तियों के साथ युद्ध में विजय पाने के लिए हे प्रभो ! हम तुम्हें पुकारते हैं और तुम्हारा आँचल पकड़ते हैं ।

हे परम पावन प्रभो ! हम में सात्त्विक वृत्तियाँ जागरित हों। क्षमा, सरलता, स्थिरता, निर्भयता, अहङ्कारशून्यता इत्यादि शुभ भावनाएँ हमारी सम्पत्ति हों । हमारा शरीर स्वस्थ तथा परिपुष्ट हो, मन सूक्ष्म तथा उन्नत हो, आत्मा पवित्र तथा सुन्दर हो, तुम्हारे संस्पर्श से हमारी सारी शक्तियाँ विकसित हों। हृदय दया तथा सहानुभूति से भरा हो। हमारी वाणी में मिठास हो तथा दृष्टि में प्यार हो । विद्या और ज्ञान से हम परिपूर्ण हों। हमारा व्यक्तित्व महान् तथा विशाल हो ।

हे प्रभो ! अपने आशीर्वादों की वर्षा करो । दीनातिदीनों के मध्य में विचरने वाले तुम्हारे चरणारविन्दों में हमारा जीवन अर्पित हो । इसे अपनी सेवा में लेकर हमें कृतार्थ करें ।

ओ३म् शान्तिः ! शान्तिः !! शान्तिः !!!

गायत्री-मन्त्र

ओ३म् भूर्भुवः स्वः ।
तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि ।
धियो यो नः प्रचोदयात् ॥

(यजुः० ३६/३)

(विश्वामित्र ऋषिः । सविता देवता । निचृद्गायत्री छन्दः । मध्यमषड्जौ स्वरौ)

शब्दार्थ–(भूः) प्राणाधार(भुवः) दुःख दूर करनेवाला, (स्वः) आनन्ददाता (तत्) उस (सवितुः) उत्पादक, प्रेरक (वरेण्यम्) वरण करने योग्य, (भर्गः) दिव्य प्रकाश (देवस्य) परम देव का (धीमहि) धारण करें (धियः) बुद्धि व कर्मों को (यः) जो (नः) हमारे (प्रचोदयात्) बुरे कार्यों से हटाकर, श्रेष्ठ कार्यों में प्रेरित करे ।

भावार्थ–हे प्राण-स्वरूप, दुःख-विनाशक, सुखप्रदाता, आनन्द-प्रदाता सविता देव ! हम आपके वरण करने योग्य दिव्य-विज्ञान रूपी प्रकाश को धारण करें ऐसी सद्बुद्धि का उत्तम दान देकर, हम पर कृपा करें । जिससे हम सदैव पवित्र बुद्धि से प्रेरित होकर, श्रेष्ठ कार्यों को करते रहें ।

तूने हमें उत्पन्न किया, पालन कर रहा है तू,
तुझसे ही पाते प्राण हम, दुःखियों के कष्ट हरता है तू ।
तेरा महान् तेज है, छाया हुआ सभी स्थान,
सृष्टि की वस्तु-वस्तु में, तू हो रहा है विद्यमान ।
तेरा ही धरते ध्यान हम, माँगते तेरी दया,
ईश्वर हमारी बुद्धि को, श्रेष्ठ-मार्ग पर चला ।

ओ३म्

पञ्चमहायज्ञ वाणी

(प्रातःकाल उठने के समय निम्न मन्त्रों का पाठ करें)

ओं प्रातरग्निं प्रातरिन्द्रं हवामहे प्रातर्मित्रावरुणा प्रातरश्विना। प्रातर्भगं पूषणं ब्रह्मणस्पतिं प्रातः सोममुत रुद्रं हुवेम ॥१॥

प्रातर्जितं भगमुग्रं हुवेम वयं पुत्रमदितेर्यो विधर्ता। आध्रश्चिद्यं मन्यमानस्तुरश्चिद् राजा चिद्यं भगं भक्षीत्याह ॥२॥

भग प्रणेतर्भग सत्यराधो भगेमां धियमुदवा ददन्नः। भग प्र णो जनय गोभिरश्वैर्भग प्र नृभिर्नृवन्तः स्याम ॥३॥

उतेदानीं भगवन्तः स्यामोत प्रपित्व उत मध्ये अह्नाम्। उतोदिता मघवन्त्सूर्यस्य वयं देवानां सुमतौ स्याम ॥४॥

भग एव भगवाँ अस्तु देवास्तेन वयं भगवन्तः स्याम। तं त्वा भग सर्व इज्जोहवीति स नो भग पुरएता भवेह ॥५॥

(ऋ० ७।४१।१-५)

(सोते समय निम्न मन्त्रों का पाठ करें)

ओं यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं तदु सुप्तस्य तथैवैति। दूरङ्गमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिव-सङ्कल्पमस्तु ॥१॥

येन कर्माण्यपसो मनीषिणो यज्ञे कृण्वन्ति विदथेषु धीराः। यदपूर्वं यक्षमन्तः प्रजानां तन्मे मनः शिव-सङ्कल्पमस्तु ॥२॥

यत्प्रज्ञानमुत चेतो धृतिश्च यज्ज्योतिरन्तरमृतं प्रजासु। यस्मान्न ऋते किञ्चन कर्म क्रियते तन्मे मनः शिव-सङ्कल्पमस्तु ॥३॥

येनेदम्भूतं भुवनम्भविष्यत् परिगृहीतममृतेन सर्वम्। येन यज्ञस्तायते सप्तहोता तन्मे मनः शिव-सङ्कल्पमस्तु ॥४॥

यस्मिन्नृचः साम यजूꣳषि यस्मिन्प्रतिष्ठिता रथनाभाविवाराः। यस्मिँश्चित्तꣳ सर्वमोतं प्रजानां तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥५॥

सुषारथिरश्वानिव यन्मनुष्यान्नेनीयतेऽभीशुभिर्वाजिन इव। हृत्प्रतिष्ठं यदजिरं जविष्ठं तन्मे मनः शिव-सङ्कल्पमस्तु ॥६॥ *(यजुः० ३४/१-६)*

॥ ओ३म् ॥

ब्रह्मयज्ञ (सन्ध्या)

(गायत्री-मन्त्र)

ओ३म् भूर्भुवः स्वः । तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि । धियो यो नः प्रचोदयात् ॥

(यजु० ३६/३)

(आचमन मन्त्र)

निम्न मन्त्र से दाहिने हाथ की हथेली में जल लेकर तीन बार आचमन करें–

ओ३म् शन्नो देवीरभिष्टयऽआपो भवन्तु पीतये । शं योरभिस्रवन्तु नः ॥ *(यजु० ३६/१२)*

सर्वव्यापक परमेश्वर आप मनोवांछित सुख और पूर्णानन्द की प्राप्ति के लिए हमको कल्याणकारी हों और हम पर सब ओर से सुख की वृष्टि करें ।

(अंगस्पर्श मन्त्र)

निम्न मन्त्रों से बाँये हाथ की अंजलि में जल लेकर, दाहिने हाथ की मध्यमा और अनामिका अंगुलियों द्वारा शरीर के अङ्गों पर जल का स्पर्श करें–

ओं वाक् वाक् । (इससे मुख पर)

ओं प्राणः प्राणः। (इससे नासिका पर)

ओं चक्षुश्चक्षुः। (इससे आँखों पर)

ओं श्रोत्रं श्रोत्रम् । (इससे कानों पर)
ओं नाभिः । (इससे नाभि पर)
ओं हृदयम् । (इससे हृदय पर)
ओं कण्ठः। (इससे कण्ठ पर)
ओं शिरः। (इससे सिर पर)
ओं बाहुभ्यां यशोबलम् । (इससे दोनों भुजाओं पर)
ओं करतलकरपृष्ठे ।। (इससे दोनों हथेलियों के पृष्ठभाग पर)

हे अन्तर्यामिन् ! मैं प्रार्थना करता हूं कि मैं जान बूझ कर अपनी इन्द्रियों, अर्थात् वाक्, प्राण, चक्षु, श्रोत्र, हृदय, कण्ठ, शिर, बाहु, करतल और करपृष्ठ आदि से कदापि पाप न करूं, ऐसी कृपा करो ।

(मार्जन मन्त्र)

निम्न मन्त्रों से शरीर के अवयवों पर जल के छींटे लगायें—

ओं भूः पुनातु शिरसि । (इससे सिर पर)
ओं भुवः पुनातु नेत्रयोः। (इससे दोनों नेत्रों पर)
ओं स्वः पुनातु कण्ठे । (इससे कण्ठ पर)
ओं महः पुनातु हृदये । (इससे हृदय पर)
ओं जनः पुनातु नाभ्याम् । (इससे नाभि पर)
ओं तपः पुनातु पादयोः। (इससे दोनों पैरों पर)
ओं सत्यं पुनातु पुनश्शिरसि । (इससे सिर पर)
ओं खम्ब्रह्म पुनातु सर्वत्र ।। (इससे सब शरीर पर)

हे दयानिधे ! आप मेरी इन्द्रियाँ, अर्थात् शिर, नेत्र, कण्ठ, हृदय, नाभि, पांव आदि को पवित्र करके बलवान् और यशस्वी कीजिए ।

(प्राणायाम मन्त्र)

निम्न मन्त्र के बाद कम से कम तीन बार प्राणायाम अवश्य करें—

ओं भूः। ओं भुवः। ओं स्वः। ओं महः। ओं जनः। ओं तपः। ओं सत्यम् ॥

प्राणस्वरूप, प्राणों से प्यारा, दुःख दूर करने हारा, सर्वव्यापक आनन्द-स्वरूप, सबसे बड़ा, सबका (जनक) पिता, दुष्टों को संतापकारी, सबको जानने वाला और अविनाशी प्रभु है ।

(अघमर्षण मन्त्र)

ओम् ऋतं च सत्यं चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत ।
ततो रात्र्यजायत ततः समुद्रोऽअर्णवः ॥१॥

परमेश्वर के अनन्त सामर्थ्य से वेदविद्या और कार्यरूप प्रकृति उत्पन्न हुई । उसी के सामर्थ्य से प्रलय और उसी के सामर्थ्य से समुद्र उत्पन्न हुए ॥१॥

समुद्रादर्णवादधि संवत्सरोऽअजायत ।
अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी ॥२॥

जगत् को वश में रखने वाले परमेश्वर ने अपने सदृश स्वभाव से जलकोष के पीछे काल के विभाग—वर्ष, दिन और रात्रि रचे ॥२॥

सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत् ।
दिवं च पृथिवीं चान्तरिक्षमथो स्वः ॥३॥

(ऋ० १०/१९०/१-३)

विधाता ने सूर्य, चन्द्र, द्यु लोक, पृथ्वीलोक, अन्तरिक्ष और उसमें फिरने वाले सब लोक-लोकान्तर यथापूर्व बनाए ॥३॥

(आचमन मन्त्र)

निम्न मन्त्र से तीन बार आचमन करें–

ओ३म् शन्नो देवीरभिष्टयऽआपो भवन्तु पीतये। शं योरभिस्रवन्तु नः ॥ *(यजु० ३६/१२)*

तत्पश्चात्–

(मनसा परिक्रमा मन्त्र)

ओं प्राची दिगग्निरधिपतिरसितो रक्षितादित्या इषवः। तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु । योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ॥१॥ *(अथर्व० ३/२७/१)*

हे सर्वज्ञ परमेश्वर ! आप हमारे सम्मुख की ओर पूर्व दिशा के अधिष्ठाता हो, स्वतन्त्र राजा और हमारी रक्षा करने वाले हैं, आपने सूर्य को रचा है जिनकी किरणों द्वारा पृथ्वी पर जीवन आता है । आपके आधिपत्य में रक्षा और जीवन प्रदान के लिए, हे प्रभो ! आपको बारम्बार नमस्कार है । जो अज्ञानवश हमसे द्वेष करता है अथवा जिससे हम द्वेष करते हैं, उसे हम आपके न्यायरूपी सामर्थ्य पर छोड़ते हैं ॥१॥

दक्षिणा दिगिन्द्रोऽधिपतिस्तिरश्चिराजी रक्षिता पितर इषवः । तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु । योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ॥२॥ *(अथर्व० ३/२७/२)*

हे परमेश्वर ! आप हमारी दक्षिण दिशा के अधिष्ठाता

हो । आप हमारे राजाधिराज हैं और भुजंगादि बिना हड्डी वाले जन्तुओं से हमारी रक्षा करते हैं, और ज्ञानियों के द्वारा हमें ज्ञान प्रदान करते हैं । आपके आधिपत्य में······(आगे पूर्व मन्त्र के अर्थ के समान) ।।२।।

प्रतीची दिग्वरुणोऽधिपतिः पृदाकू रक्षितान्नमिषवः। तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु । यो३स्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ।।३।। *(अथर्व० ३।२७।३)*

हे सौन्दर्य के भण्डार ! आप हमारे पीछे की ओर के अधिष्ठाता हैं, हमारे महाराज हैं, बड़े-बड़े हड्डी वाले अजगर, बिच्छू और विषधारी जन्तुओं से हमारी रक्षा करते हैं । आप के······ (आगे पूर्ववत्) ।।३।।

उदीची दिक् सोमोऽधिपतिः स्वजो रक्षिताशनिरिषवः। तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु । यो३स्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ।।४।। *(अथर्व० ३।२७।४)*

हे पिता ! आप हमारी उत्तर दिशा के अधिष्ठाता हैं और हमारे परम ऐश्वर्ययुक्त स्वामी हैं । स्वयम्भू और हमारे रक्षक हैं, आप ही बिजली द्वारा रुधिर की गति और प्राणों की रक्षा करते हैं । आपके······ (आगे पूर्ववत्) ।।४।।

ध्रुवा दिग्विष्णुरधिपतिः कल्माषग्रीवो रक्षिता वीरुध इषवः । तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु। यो३स्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ।।५।। *(अथर्व० ३।२७।५)*

हे सर्वव्यापक प्रभो ! आप हमारे नीचे की ओर के देशों में विद्यमान हैं । आप रंग वाले वृक्षों और लताओं द्वारा हमारे प्राणों की रक्षा करते हैं। आपके…… (आगे पूर्ववत्) ।।५।।

ऊर्ध्वा दिग्बृहस्पतिरधिपतिः श्वित्रो रक्षिता वर्षमिषवः। तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु । योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ।।६।। *(अथर्व० ३/२७/६)*

हे महान् प्रभो ! आप ऊपर के लोकों में व्यापक दिशाओं के अधिष्ठाता हो, हमारे स्वामी और रक्षक हैं । आप वर्षा करके हमारी कृषि को सींचते हैं जिससे हमारा जीवन होता है । आपके…… (आगे पूर्ववत्) ।।६।।

(उपस्थान मन्त्र)

ओं उद्वयं तमसस्परि स्वः पश्यन्तऽउत्तरम् । देवं देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम् ।।१।।

(यजु० ३५/१४)

हे प्रभो ! आप अज्ञान अन्धकार के परे, सुखस्वरूप, प्रलय के पश्चात् रहने वाले, दिव्य गुणों के साथ सर्वत्र विद्यमान देव हमको दुःखों से पार करने वाले हैं, हम आपके उत्तम ज्योतिः स्वरूप ज्ञान को प्राप्त हों ।।१।।

उदु त्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः । दृशे विश्वाय सूर्यम् ।।२।। *(यजु० ३३/३१)*

हे जगदीश्वर ! आप सकल ऐश्वर्य के उत्पादक, सर्वज्ञ, जीवात्मा के प्रकाशक हैं, जैसे सूर्य किरणों से संसार को दिखाता है वैसे ही आपकी महिमा सबको दिखाने के लिए संसार के

पदार्थ, पताका का काम करते हैं । जैसे झण्डियां मार्ग दिखलाती हैं उसी प्रकार सृष्टि-नियम सबको, आप की प्रतीति कराते हैं ॥२॥

चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुण-स्याग्नेः । आप्रा द्यावापृथिवीऽअन्तरिक्षꣳ सूर्यऽआत्मा जगतस्तस्थुषश्च स्वाहा ॥३॥ *(यजु० ७।४२)*

हे स्वामिन् ! इस संसार के समस्त पदार्थ आपको दर्शाते हैं । आप दिव्य पदार्थों के बल हैं । सूर्य, चन्द्र और अग्नि के चक्षु अथवा प्रकाशक हैं । भूमि, आकाश और तदन्तर्गत लोक सब आपके सामर्थ्य में हैं । आप चर-अचर जगत् के उत्पादक और अन्तर्यामी हैं । हे प्रभो ! हम सर्वत्र मन, वाणी और कर्म से सत्य का ग्रहण करें ॥३॥

तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत् । पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतꣳ शृणुयाम शरदः शतम्प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतम्भूयश्च शरदः शतात् ॥४॥ *(यजु० ३६।२४)*

अर्थ : उस सब के द्रष्टा, धार्मिक विद्वानों के परमहितकारक, सृष्टि से पूर्व, पश्चात् और मध्य में सत्यस्वरूप से विद्यमान रहनेवाले और सर्व जगदुत्पादक ब्रह्म को सौ वर्ष तक देखें। उसके सहारे से सौ वर्ष तक जीयें । सौ वर्ष तक उसका ही गुणगान सुनें । उसी ब्रह्म का सौ वर्ष तक उपदेश करें। उसी की कृपा से सौ वर्ष तक किसी के अधीन न रहें। उसी ईश्वर की आज्ञापालन और कृपा से सौ वर्ष के उपरान्त भी हम लोग देखें, जीवें, सुनें, सुनावें और स्वतन्त्र रहें ।

(गायत्री मन्त्र)

ओं भूर्भुवः स्वः । तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि । धियो यो नः प्रचोदयात् ॥ *(यजुः० ३६/३)*

हे प्राणस्वरूप, दुःखहर्ता, सर्वव्यापक आनन्द के देने वाले प्रभो ! आप सर्वेश और सकल जगत् के उत्पादक हैं । हम आपके उस पूजनीय पापनाशक स्वरूप तेज का ध्यान करते हैं जो हमारी बुद्धियों को प्रकाशित करता है । हे पिता ! आप से हमारी बुद्धि कदापि विमुख न हो । आप हमारी बुद्धियों में सदैव प्रकाशित रहें और हमारी बुद्धियों को सत्कर्मों में प्रेरित करें ।

(अथ समर्पण)

हे ईश्वर दयानिधे ! भवत्कृपयानेन जपोपासनादि कर्मणा धर्मार्थकाममोक्षाणां सद्यः सिद्धिर्भवेन्नः ।

हे परमेश्वर दयानिधे ! आपकी कृपा से जपोपासनादि कर्मों को करके हम धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की सिद्धि को शीघ्र प्राप्त होवें ।

(नमस्कार मन्त्र)

ओं नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शङ्कराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च ॥ *(यजु० १६/४१)*

जो सुख स्वरूप संसार के उत्तम सुखों का देने वाला, कल्याणकारी मोक्षस्वरूप, धर्मयुक्त कार्यों का ही करने वाला, अपने भक्तों को सुख का देने वाला और धर्म कार्यों में युक्त करने वाला, अत्यन्त मंगलस्वरूप एवं धार्मिक मनुष्यों को मोक्षसुख देने हारा है उसको हमारा बारम्बार नमस्कार हो ।

ओं शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

ओ३म्

(देवयज्ञ अग्निहोत्र)

(अथ ऋत्विग्वरणम्)

यजमानोक्तिः – **ओम् आवसोः सदने सीद ।**

इस मन्त्र का उच्चारण करके ऋत्विज् को कर्म कराने की इच्छा से स्वीकार करने के लिये प्रार्थना करे ।

ऋत्विगुक्तिः – **ओं सीदामि ।**
यजमानोक्तिः – **अहमद्योक्तकर्मकरणाय भवन्तं वृणे ।**
ऋत्विगुक्तिः – **वृतोऽस्मि ।**

(आचमन मन्त्र)

यजमान पूर्वाभिमुख आसन पर बैठकर, जल का पात्र ले, दाहिने हाथ की अंजलि में जल भरकर, निम्न मन्त्रों से आचमन करें–

ओम् अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा ॥ (प्रथम बार)
ओम् अमृतापिधानमसि स्वाहा ॥ (द्वितीय बार)
ओं सत्यं यशः श्रीर्मयि श्रीः श्रयतां स्वाहा ॥ (तृतीय बार)

(तैत्तिरीय आ० प्र० १०, अनु० ३२, ३५)

इसके बाद हाथ धो लें । तत्पश्चात् बाँये हाथ की अंजलि में जल भरकर दाहिने हाथ की अनामिका और मध्यमा से, बाँये हाथ में जल लेकर अंग–स्पर्श करें । जल का स्पर्श शरीर के अंगों पर पहले दाहिनी ओर तथा बाद में बाईं ओर करें–

(अंगस्पर्श मन्त्र)

ओं वाङ्म आस्येऽस्तु । (इससे मुख पर)

ओं नसोर्मे प्राणोऽस्तु । (इससे नासिका पर)

ओम् अक्ष्णोर्मे चक्षुरस्तु । (इससे आँखों पर)

ओं कर्णयोर्मे श्रोत्रमस्तु । (इससे कानों पर)

ओं बाह्वोर्मे बलमस्तु । (इससे बाहों पर)

ओम् ऊर्वोर्म ओजोऽस्तु । (इससे जंघाओं पर)

ओम् अरिष्टानि मेऽङ्गानि तनूस्तन्वा मे सह सन्तु ।
(इससे शरीर के समस्त अंगों पर जल छिड़कें)
(पार०गृ० २ । २५)

(यज्ञोपवीत धारण करने का मन्त्र)

ओं यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात् । आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः ॥१॥ ओं यज्ञोपवीतमसि यज्ञस्य त्वा यज्ञोपवीतेनोपनह्यामि ॥२॥ (पार० गृ० २।२।११)

प्रजापति-प्रदत्त यज्ञोपवीत परम-पवित्र है, यह शुभ्र-शुद्ध यज्ञोपवीत मुझे आयु-बल और तेज को प्रदान करने वाला होवे। इस कारण से मैं इसे अपने जीवन के लिए ग्रहण करता हूं ।

अथेश्वर स्तुतिप्रार्थनोपासना मन्त्राः

ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद् भद्रन्तन्न आ सुव ॥१॥ *(यजु० ३०।३)*

अर्थ—हे सकल जगत् के उत्पत्तिकर्ता, समग्र ऐश्वर्ययुक्त शुद्ध स्वरूप, सब सुखों के दाता परमेश्वर आप कृपा करके हमारे सम्पूर्ण दुर्गुण-दुर्व्यसन और दुःखों को दूर कर दीजिये। और जो कल्याणकारक गुण-कर्म- स्वभाव और पदार्थ हैं वह सब हमको प्राप्त कीजिये ।

हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत् । स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥२॥ *(यजु० १३।४)*

अर्थ—जो स्वप्रकाश स्वरूप और जिसने प्रकाश करनेहारे सूर्य-चन्द्रादि पदार्थ उत्पन्न करके धारण किये हैं, जो उत्पन्न हुए सम्पूर्ण जगत् का प्रसिद्ध स्वामी एक ही चेतनस्वरूप था, जो सब जगत् के उत्पन्न होने से पूर्व वर्तमान था, सो इस भूमि और सूर्यादि को धारण कर रहा है। हम लोग उस सुखस्वरूप शुद्ध परमात्मा के लिए ग्रहण करने योग्य, योगाभ्यास और अति प्रेम से विशेष भक्ति किया करें ।

य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवाः । यस्य छायाऽमृतं यस्य मृत्युः कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥३॥ *(यजु० २५।१३)*

अर्थ—जो आत्मज्ञान का दाता, शरीर, आत्मा और समाज के बल का देनेहारा, जिसकी सब विद्वान् लोग उपासना करते हैं और जिसका प्रत्यक्ष सत्यस्वरूप शासन, और न्याय अर्थात् शिक्षा को मानते हैं, जिसका आश्रय ही मोक्ष-सुखदायक है जिसका न मानना अर्थात् भक्ति न करना ही मृत्यु आदि दुःख

का हेतु है, हम लोग उस सुखस्वरूप सकल ज्ञान के देने हारे परमात्मा की प्राप्ति के लिए आत्मा और अन्तःकरण से भक्ति अर्थात् उसी की आज्ञा पालन करने में तत्पर रहें ।

यः प्राणतो निमिषतो महित्वैक इद्राजा जगतो बभूव। य ईशेऽअस्य द्विपदश्चतुष्पदः कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥४॥ (यजु० २३/३)

अर्थ—जो प्राणवाले और अप्राणिरूप जगत् का अपनी अनन्त महिमा से एक ही विराजमान राजा है, जो इस मनुष्यादि और गौ आदि प्राणियों के शरीर की रचना करता है, हम लोग उस सुखस्वरूप सकलैश्वर्य के देनेहारे परमात्मा के लिए अपनी सकल उत्तम सामग्री से विशेष भक्ति करें ।

येन द्यौरुग्रा पृथिवी च दृढा येन स्वः स्तभितं येन नाकः। योऽअन्तरिक्षे रजसो विमानः कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥५॥ (यजु० ३२/६)

अर्थ—जिस परमात्मा ने तीक्ष्ण स्वभाववाले सूर्य आदि और भूमि को धारण किया और जिस जगदीश्वर ने सुख को धारण किया और जिस ईश्वर ने दुःखरहित मोक्ष को धारण किया है, जो आकाश में सब लोकलोकान्तरों को विशेष मानयुक्त अर्थात् जैसे आकाश में पक्षी उड़ते हैं, वैसे सब लोकों का निर्माण करता और भ्रमण कराता है, हम लोग उस सुखदायक कामना करने के योग्य परब्रह्म की प्राप्ति के लिए सब सामर्थ्य से विशेष भक्ति करें ।

प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परि ता बभूव। यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नोऽअस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम् ॥६॥ (ऋ० १०/१२१/१०)

अर्थ—हे सब प्रजा के स्वामी परमात्मा आपसे भिन्न दूसरा कोई उन इन सब उत्पन्न हुए जड़-चेतनादिकों को नहीं तिरस्कार करता है, अर्थात् आप सर्वोपरि हैं । जिस-जिस

पदार्थ की कामनावाले हम लोग भक्ति करें आपका आश्रय लेवें और वाञ्छा करें, उस-उस की कामना हमारी सिद्ध होवे, जिससे हम लोग धनैश्वर्यों के स्वामी होवें ।

स नो॒ बन्धु॑र्जनि॒ता स वि॑धा॒ता धामा॑नि वेद॒ भुव॑नानि॒ विश्वा॑ । यत्र॑ दे॒वा अ॒मृत॑मानशा॒नास्तृ॒तीये॒ धाम॑न्न॒ध्यैर॑यन्त ॥७॥ (यजु० ३२।१०)

अर्थ—हे मनुष्यो ! वह परमात्मा अपने लोगों को भ्राता के समान सुखदायक, सकल जगत् का उत्पादक, वह सब कामों को पूर्ण करनेहारा, सम्पूर्ण लोकमात्र और नाम, स्थान जन्मों को जानता है और जिस सांसारिक सुख-दुःख से रहित नित्यानन्द-युक्त मोक्ष-स्वरूप धारण करनेहारे परमात्मा में मोक्ष को प्राप्त होके विद्वान् लोग स्वेच्छापूर्वक विचरते हैं, वही परमात्मा अपना गुरु, आचार्य, राजा और न्यायाधीश है । अपने लोग मिलके सदा उस की भक्ति किया करें ।

अग्ने॒ नय॑ सु॒पथा॑ रा॒येऽअ॒स्मान् विश्वा॑नि देव व॒युना॑नि वि॒द्वान् । यु॒यो॒ध्य॒स्मज्जु॑हुरा॒णमेनो॒ भूयि॑ष्ठान्ते॒ नम॑ उक्तिं विधेम ॥८॥ (यजुः० ४०।१६)

अर्थ—हे स्वप्रकाशक, ज्ञानस्वरूप, सब जगत् के प्रकाश करनेहारे सकल सुखदाता परमेश्वर, आप जिससे सम्पूर्ण विद्यायुक्त हैं, कृपा करके हम लोगों को विज्ञान वा राज्यादि ऐश्वर्य की प्राप्ति के लिए अच्छे, धर्मयुक्त आप्त लोगों के मार्ग से सम्पूर्ण प्रज्ञान और उत्तम कर्म प्राप्त कराइये और हमसे कुटिलतायुक्त पापरूप कर्म को दूर कीजिए । इस कारण हम लोग आपकी बहुत प्रकार की स्तुतिरूप नम्रतापूर्वक प्रशंसा सदा किया करें और सर्वदा आनन्द में रहें ।

इति ईश्वर स्तुतिप्रार्थनोपासना मन्त्राः ।

विशेष-स्वस्तिवाचनम् पृ०72 तथा शान्तिकरणम् पृ०77 पर देखें ।

देवयज्ञ-अग्न्याधानम्

निम्न मन्त्र से दीपक जलायें–

ओं भूर्भुवः स्वः ॥ *(गो०गृ० १।१।११)*

इसके पश्चात् निम्न मन्त्र को पढ़कर दीपक से कपूर को प्रज्वलित कर, अग्न्याधान करें–

ओं भूर्भुवः स्वर्द्यौरिव भूम्ना पृथिवीव वरिम्णा । तस्यास्ते पृथिवि देवयजनि पृष्ठेऽग्निमन्नादमन्ना-द्यायादधे ॥ *(यजु० ३।५)*

निम्न मन्त्र को पढ़कर यज्ञकुण्ड में समिधाओं का चयन कर, अग्नि को अच्छी तरह प्रदीप्त करें–

ओम उद् बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्त्ते सꣳसृजेथामयं च । अस्मिन्त्सधस्थेऽअध्युत्तरस्मिन् विश्वे देवा यजमानश्च सीदत ॥ *(यजु० १५।५४)*

(समिदाधान)

जब अग्नि सम्यक् प्रकार से जलने लगे, तब आठ-आठ अंगुल की तीन समिधायें घृत में डुबोकर, निम्न चार मन्त्रों में से **प्रथम-मन्त्र से एक समिधा, द्वितीय व तृतीय-दोनों मन्त्रों से दूसरी समिधा, तथा चतुर्थ मन्त्र बोलकर तीसरी समिधा** का अग्नि में स्थापन करें । इस प्रकार इस मन्त्र से एक समिधा–

ओम् अयन्त इध्म आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्धस्व चेद्ध वर्धय चास्मान् प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसे-नान्नाद्येन समेधय स्वाहा ॥ इदमग्नये जातवेदसे इदन्न मम ॥ *(आ०गृह्य० १।१०।१२)*

इन दोनों मन्त्रों से दूसरी समिधा का यज्ञकुण्ड में स्थापन करें ।

ओम् समिधाग्निं दुवस्यत घृतैर्बोधयतातिथिम् । आस्मिन् हव्या जुहोतन स्वाहा ॥ इदमग्नये इदन्न मम ॥१॥

सु समिद्धाय शोचिषे घृतं तीव्रं जुहोतन । अग्नये जातवेदसे स्वाहा ॥ इदमग्नये जातवेदसे इदन्न मम ॥२॥

(यजु० ३/१,२)

इस मन्त्र से तीसरी समिधा का यज्ञकुण्ड में स्थापन करें।

तन्त्वा समिद्भिरङ्गिरो घृतेन वर्द्धयामसि । बृहच्छोचा यविष्ठ्य स्वाहा ॥ इदमग्नयेऽङ्गिरसे इदन्न मम ॥

(यजु० ३/३)

(पंचघृताहुति)

निम्न मन्त्रों से घृत की आहुतियाँ प्रदान करें—

ओम् अयन्त इध्म आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्धस्व चेद्ध वर्धय चास्मान् प्रजया पशुभिर्ब्रह्म-वर्चसेनान्नाद्येन समेधय स्वाहा ॥ इदमग्नये जातवेदसे इदन्न मम ॥१॥

ओम् अयन्त इध्म आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्धस्व चेद्ध वर्धय चास्मान् प्रजया पशुभिर्ब्रह्म-वर्चसेनान्नाद्येन समेधय स्वाहा ॥ इदमग्नये जातवेदसे इदन्न मम ॥२॥

ओम् अयन्त इध्म आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्धस्व चेद्ध वर्धय चास्मान् प्रजया पशुभिर्ब्रह्म-वर्चसेनान्नाद्येन समेधय स्वाहा ॥ इदमग्नये जातवेदसे इदन्न मम ॥३॥

ओम् अयन्त इध्म आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्धस्व चेद्ध वर्धय चास्मान् प्रजया पशुभिर्ब्रह्म-वर्चसेनान्नाद्येन समेधय स्वाहा ॥ इदमग्नये जातवेदसे इदन्न मम ॥४॥

ओम् अयन्त इध्म आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्धस्व चेद्ध वर्धय चास्मान् प्रजया पशुभिर्ब्रह्म-वर्चसेनान्नाद्येन समेधय स्वाहा ॥ इदमग्नये जातवेदसे इदन्न मम ॥५॥ *(आ० गृ० १/१०/१२)*

(जल सिंचन)

निम्न मन्त्रों से हाथ की अंजली में जल लेकर, मन्त्रपाठ के पश्चात् निर्दिष्ट दिशाओं में यज्ञकुण्ड के चारों ओर जल छिड़कावें–

ओम् अदितेऽनुमन्यस्व ॥ (इससे पूर्व दिशा में) (दक्षिण से उत्तर की ओर)

ओम् अनुमतेऽनुमन्यस्व ॥ (इससे पश्चिम दिशा में) (दक्षिण से उत्तर की ओर)

ओं सरस्वत्यनुमन्यस्व ॥ (इससे उत्तर दिशा में) (पश्चिम से पूर्व की ओर)

(गो० गृ० १/३/१-३)

इसके पश्चात् निम्न मन्त्र से पूर्व दिशा से प्रारम्भ कर, दक्षिण–पश्चिम–उत्तर होते हुए, पूर्व दिशा तक चारों ओर जल छिड़कावें–

ओं देव सवितः प्रसुव यज्ञं प्रसुव यज्ञपतिं भगाय। दिव्यो गन्धर्वः केतपूः केतं नः पुनातु वाचस्पतिर्वाचं नः स्वदतु॥ (यजु० ३०।१)

(आघारावाज्याहुति मन्त्राः)

निम्न दोनों मन्त्रों से निर्दिष्ट दिशा में, घृत की अपनी ओर से आगे की ओर, धार बनाते हुए आहुति देवें–

ओम् अग्नये स्वाहा ॥ इदमग्नये इदन्न मम ॥

(इससे उत्तर दिशा में, अर्थात् अपने बाईं ओर)

ओम् सोमाय स्वाहा ॥ इदं सोमाय इदन्न मम ॥

(इससे दक्षिण दिशा में, अर्थात् अपनी दाहिनी ओर)

(आज्यभागाहुति मन्त्राः)

निम्न दोनों मन्त्रों से यज्ञकुण्ड के मध्य में घृत की आहुति प्रदान करें–

ओं प्रजापतये स्वाहा ॥ इदं प्रजापतये इदन्न मम ॥

ओम् इन्द्राय स्वाहा ॥ इदमिन्द्राय इदन्न मम ॥

(प्रधान आहुतियाँ)

प्रातःकालीन यज्ञ की आहुतियाँ

निम्न मन्त्रों से घृत-सामग्री, दोनों की आहुतियाँ प्रदान करें-

ओं सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा ॥
ओं सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा ॥
ओं ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा ॥
ओं सजूर्देवेन सवित्रा सजूरुषसेन्द्रवत्या । जुषाणः सूर्यो वेतु स्वाहा ॥ *(यजु० ३/९,१०)*

ओं भूरग्नये प्राणाय स्वाहा ॥
इदमग्नये प्राणाय इदन्न मम ॥

ओं भुवर्वायवेऽपानाय स्वाहा ॥
इदं वायवेऽपानाय इदन्न मम ॥

ओं स्वरादित्याय व्यानाय स्वाहा ॥
इदमादित्याय व्यानाय इदन्न मम ॥

ओं भूर्भुवः स्वरग्निवाय्वादित्येभ्यः प्राणापान-व्यानेभ्यः स्वाहा ॥ इदमग्निवाय्वादित्येभ्यः प्राणापान-व्यानेभ्यः इदन्न मम ॥

ओम् आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरों स्वाहा ॥

ओं यां मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते । तया मामद्य मेधयाग्ने मेधाविनं कुरु स्वाहा ॥ (यजु० ३२।१४)

ओं विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परा सुव । यद् भद्रं तन्न आ सुव ॥ (यजु० ३०।३)

ओम् अग्ने नय सुपथा रायेऽअस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान् । युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठान्ते नम उक्तिं विधेम ॥ (यजुः० ४०।१६)

सायंकालीन यज्ञ की आहुतियाँ

(आघारावाज्याहुति मन्त्राः)

(केवल घृत की आहुतियाँ)

ओम् अग्नये स्वाहा ॥ इदमग्नये इदन्न मम ॥

(इससे उत्तर दिशा में, अर्थात् अपने बाईं ओर)

ओं सोमाय स्वाहा ॥ इदं सोमाय इदन्न मम ॥

(इससे दक्षिण दिशा में, अर्थात् अपनी दाहिनी ओर)

(आज्यभागाहुति मन्त्राः)

निम्न मन्त्रों से यज्ञकुण्ड के मध्य में घृत की आहुति देवें–

ओं प्रजापतये स्वाहा ॥ इदं प्रजापतये इदन्न मम ॥

ओम् इन्द्राय स्वाहा ॥ इदमिन्द्राय इदन्न मम ॥

निम्न मन्त्रों से घृत-सामग्री दोनों की आहुतियाँ प्रदान करें–

ओम् अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा ॥

ओम् अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा ॥
ओम् अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा ॥

इस मन्त्र की आहुति मौन हो करके देनी चाहिये ।

ओं सजूर्देवेन सवित्रा सजूरात्र्येन्द्रवत्या । जुषाणो अग्निर्वेतु स्वाहा ॥ (यजु० ३/९,१०)

ओं भूरग्नये प्राणाय स्वाहा ॥
इदमग्नये प्राणाय इदन्न मम ॥
ओं भुवर्वायवेऽपानाय स्वाहा ॥
इदं वायवेऽपानाय इदन्न मम ॥
ओं स्वरादित्याय व्यानाय स्वाहा ॥
इदमादित्याय व्यानाय इदन्न मम ॥

ओं भूर्भुवः स्वरग्निवाय्वादित्येभ्यः प्राणापान-व्यानेभ्यः स्वाहा ॥ इदमग्निवाय्वादित्येभ्यः प्राणापान-व्यानेभ्यः इदन्न मम ॥

ओम् आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरों स्वाहा ॥

ओं यां मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते । तया मामद्य मेधयाग्ने मेधाविनं कुरु स्वाहा ॥६॥

(यजुः० ३२/१४)

ओं विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परा सुव । यद् भद्रं तन्न आ सुव ॥७॥ (यजुः० ३०/३)

ओम् अग्ने नय सुपथा रायेऽअस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान् । युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठान्ते नम उक्तिं विधेम ।।८।। (यजु:० ४०/१६)

तत्पश्चात् गायत्री-मन्त्र की तीन बार आहुतियाँ प्रदान करें–

(गायत्री-मन्त्र)

ओ३म् भूर्भुवः स्वः । तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि । धियो यो नः प्रचोदयात् ।।

(यजु० ३६/३)

तत्पश्चात् निम्न तीन-मन्त्रों द्वारा पूर्णाहुति प्रदान करें–

(पूर्णाहुति मन्त्र)

ओं सर्वं वै पूर्णं स्वाहा ।।१।। ओं सर्वं वै पूर्णं स्वाहा ।।२।। ओं सर्वं वै पूर्णं स्वाहा ।।३।।

(यहां यदि यज्ञ प्रार्थना करनी हो तो पृष्ठ ४५ देखें)

पूर्णाहुति प्रकरण एवं मंगलमय अवसरों पर विशेष मन्त्र

निम्न सभी मन्त्रों द्वारा आहुतियाँ केवल घृत की ही दें–

(आघारावाज्याहुति मन्त्राः)

निम्न दोनों मन्त्रों से निर्दिष्ट दिशा में घृत को अपनी ओर से आगे की ओर धार बनाते हुए आहुति देवें–

ओम् अग्नये स्वाहा ।। इदमग्नये इदन्न मम ।।

(इससे उत्तर दिशा में, अर्थात् अपने बाईं ओर)

ओं सोमाय स्वाहा ॥ इदं सोमाय इदन्न मम ॥

(इससे दक्षिण दिशा में, अर्थात् अपनी दाहिनी ओर)

(आज्यभागाहुति मन्त्राः)

निम्न दोनों मन्त्रों से यज्ञकुण्ड के मध्य में घृत की आहुति प्रदान करें–

ओं प्रजापतये स्वाहा ॥ इदं प्रजापतये इदन्न मम ॥

ओम् इन्द्राय स्वाहा ॥ इदमिन्द्राय इदन्न मम ॥

(व्याहृत्याहुति मन्त्राः)

ओं भूरग्नये स्वाहा ॥ इदमग्नये इदन्न मम ॥
ओं भुवर्वायवे स्वाहा ॥ इदं वायवे इदन्न मम ॥
ओं स्वरादित्याय स्वाहा ॥ इदमादित्याय इदन्न मम ॥

ओं भूर्भुवः स्वरग्निवाय्वादित्येभ्यः स्वाहा ॥ इदमग्निवाय्वादित्येभ्यः इदन्न मम ॥

(स्विष्टकृदाहुतिमन्त्रः)

ओं यदस्य कर्मणोऽत्यरीरिचं यद्वा न्यूनमिहाकरम् । अग्निष्टत्स्विष्टकृद्विद्यात्सर्वं स्विष्टम् सुहुतं करोतु मे । अग्नये स्विष्टकृते सुहुतहुते सर्वप्रायश्चित्ताहुतीनां कामानां समर्द्धयित्रे सर्वान्नः कामान्त्समर्द्धय स्वाहा ॥ इदमग्नये स्विष्टकृते इदन्न मम ॥

(प्राजापत्याहुतिमन्त्रः)

निम्न आहुति मौन होकर प्रदान करें—

ओं प्रजापतये स्वाहा ॥ इदं प्रजापतये इदन्न मम॥

(पवमानाज्याहुति मन्त्राः)

ओं भूर्भुवः स्वः । अग्न आयूंषि पवस आ सुवोर्जमिषं च नः । आरे बाधस्व दुच्छुनां स्वाहा ॥ इदमग्नये पवमानाय इदन्न मम ॥१॥

ओं भूर्भुवः स्वः । अग्निर्ऋषिः पवमानः पाञ्चजन्यः पुरोहितः । तमीमहे महागयं स्वाहा ॥ इदमग्नये पवमानाय इदन्न मम ॥२॥

ओं भूर्भुवः स्वः । अग्ने पवस्व स्वपा अस्मे वर्चः सुवीर्यम् । दधद्रयिं मयि पोषं स्वाहा ॥ इदमग्नये पवमानाय इदन्न मम ॥३॥ (ऋ० ९।६६।१-२१)

ओं भूर्भुवः स्वः । प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परि ता बभूव । यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणां स्वाहा ॥ इदं प्रजापतये इदन्न मम ॥४॥ (ऋ० १०।१२१।१०)

(अष्टाज्याहुतिमन्त्राः)

ओं त्वं नोऽअग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेळोऽव यासिसीष्ठाः । यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषांसि प्र मुमुग्ध्यस्मत् स्वाहा ॥ इदमग्नी- वरुणाभ्याम् इदन्न मम ॥१॥

ओं स त्वं नो अग्नेऽवमो भवोती नेदिष्ठोऽ- अस्या उषसो व्युष्टौ । अव यक्ष्व नो वरुणं रराणो वीहि मृळीकं सुहवो न एधि स्वाहा ॥ इदमग्निवरुणा- भ्याम् इदन्न मम ॥२॥ (ऋ० ४/१/४-५)

ओम् इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृळय। त्वामवस्युरा चके स्वाहा ॥ इदं वरुणाय इदन्न मम ॥३॥ (ऋ० १/२५/१९)

ओं तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदा शास्ते यजमानो हविर्भिः । अहेळमानो वरुणेह बोध्युरुशंस मा न आयुः प्र मोषीः स्वाहा ॥ इदं वरुणाय इदन्न मम ॥४॥ (ऋ० १/२४/११)

ओं ये ते शतं वरुण ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा वितता महान्तः । तेभिर्नोऽअद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा ॥ इदं वरुणाय

सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यः इदन्न मम ।।५।। (हिरण्यकेशीय गृ० १३।१।२६)

ओम् अयाश्चाग्नेऽस्यनभिशस्तिपाश्च सत्य-मित्त्वमया असि । अया नो यज्ञं वहास्यया नो धेहि भेषजं स्वाहा ।। इदमग्नये अयसे इदन्न मम ।।६।।

—(कात्या० १५।१।११)

ओम् उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं वि मध्यमं श्रथाय । अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम स्वाहा ।। इदं वरुणायाऽऽदित्यायादितये च इदन्न मम ।।७।। (ऋ० १।२४।१५)

ओं भवतन्नः समनसौ सचेतसावरेपसौ । मा यज्ञं हिं सिष्टं मा यज्ञपतिं जातवेदसौ शिवौ भवतमद्य नः स्वाहा ।। इदं जातवेदोभ्याम् इदन्न मम ।।८।।

(यजु:० ५।३)

इन मन्त्रों के बाद तीन गायत्री मन्त्र की आहुतियाँ देकर, अथवा अधिक आहुतियाँ देने की इच्छा हो, तो **''विश्वानि देव''** तथा **''गायत्री मन्त्र''** का पाठ करके जितनी इच्छा हो, उतनी आहुतियाँ देकर निम्न मन्त्रों से तीन बार में यज्ञ की पूर्णाहुति करें–

ओ३म् पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते ।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते ।।

ओ३म् पूर्णा दर्वि परा पत सुपूर्णा पुनरापत ।
वस्नेव विक्रीणावहाऽइषमूर्जं शतक्रतो ॥

(यजु० ३/४९)

ओं सर्वं वै पूर्णꣳ स्वाहा ॥१॥
ओं सर्वं वै पूर्णꣳ स्वाहा ॥२॥
ओं सर्वं वै पूर्णꣳ स्वाहा ॥३॥

यहां पर भी यदि यज्ञ प्रार्थना करनी हो तो पृष्ठ ४५ देखें

कुछ अन्य विशिष्ट मन्त्र

(उत्तम धन की कामना)

ओ३म् इन्द्र श्रेष्ठानि द्रविणानि धेहि चित्तिं दक्षस्य सुभगत्वमस्मे । पोषं रयीणामरिष्टिं तनूनां स्वाद्मानं वाचः सुदिनत्वमह्नाम् ॥ (ऋ० २/२१/६)

हे इन्द्र ! आप हमें उत्तम धन, संस्कार, दक्षता, सौभाग्य, पुष्टि, ऐश्वर्य, स्वास्थ्य, सरलवाणी तथा उत्तमधन प्रदान करो तथा हमें इन समस्त ऐश्वर्यों को धारण कराओ । शरीर रोग रहित होवे तथा दिन सुदिन बने रहें ।

(वरदा वेदमाता)

ओ३म् स्तुता मया वरदा वेदमाता प्रचोदयन्तां पावमानी द्विजानाम् । आयुः प्राणं प्रजां पशुं कीर्तिं द्रविणं ब्रह्मवर्चसम् । मह्यं दत्वा व्रजत ब्रह्मलोकम् ॥

(अथर्व० १९/७१/१)

प्रभु कहते हैं कि मैंने वरदा-वेदमाता को तुम्हारे लिए प्रस्तुत किया है । यह तुमको प्रकृष्ट-ज्ञान की प्रेरणा देने वाली है । यह द्विजों को जहां पवित्र करती है, वहां आयु-प्राण-सन्तान-पशु-यश-धन और ब्रह्मतेज को भी प्रदान करने वाली है । यदि

तुम ब्रह्मलोक को पाना चाहते हो तो इन सबको मेरे अर्पित कर, ब्रह्मलोक को जाओ ।

(महामृत्युञ्जय मन्त्र)

ओ३म् त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् । उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात् ।। त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पतिवेदनम् । उर्वारुकमिव बन्धना-दितो मुक्षीय मामुतः ।। *(यजु० ३/६०)*

हम लोग शुद्ध गन्धयुक्त शरीर आत्मा और समाज के बल का बढ़ाने वाला रुद्र रूप जगदीश्वर है उसकी निरन्तर स्तुति करें । इनकी कृपा से जैसे खरबूजा पककर लता के सम्बन्ध से छूटकर अमृत के तुल्य होता है वैसे हम लोग भी प्राण वा शरीर के वियोग से छूट जावें और मोक्ष रूप सुख से श्रद्धारहित कभी न होवें तथा हम लोग उत्तम गन्धयुक्त रक्षा करनेहारे स्वामी का सबके अध्यक्ष जगदीश्वर का निरन्तर सत्कारपूर्वक ध्यान करें और इसके अनुग्रह से जैसे खरबूजा पककर लता के सम्बन्ध से छूटकर अमृत के समान मीठा होता है वैसे हम लोग भी इस शरीर से छूट जावें मोक्ष और अन्य जन्म के सुख और सत्य धर्म के फल से अलग न होवें ।

(प्रार्थना मन्त्र)

ओ३म् वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्रधारम् । देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्षः ।। *(यजु० १/३)*

यह यज्ञ संसार को पवित्र व धारण करने वाला तथा समस्त प्राणियों को सुख का देने वाला है। ऐसे श्रेष्ठतम् यज्ञ को, सविता परमात्मन् पवित्र करें । हे प्रभो ! आप हमारे ज्ञान-विज्ञान को यज्ञ द्वारा पवित्र कीजिये, जिससे हमारी सभी श्रेष्ठ कामनायें पूर्ण हों ।

(प्रतिज्ञा मन्त्र)

ओ३म् अग्ने व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तच्छकेयं तन्मे राध्यताम्। इदमहमनृतात् सत्यमुपैमि ॥५॥

(यजु० ३/६०)

हे अग्नि स्वरूप व्रतों के रक्षक सत्यज्ञान के प्रकाशक पूजनीय प्रभो ! मैं (अमुक) व्रत का पालन करूंगा/करूंगी। इसलिये आप से प्रार्थना करता हूं/करती हूं कि आपकी कृपा से मैं आज के दिन किए हुए व्रत का पूर्णरूप से पालन करने में समर्थ होऊं । उस किए हुए व्रत के फल से मैं चरित्र रूपी धनसम्पत्ति से युक्त होऊं और मैं असत्य भाषण, क्रोध, धूम्रपान, शराब-मांस आदि दुर्व्यसनों को त्यागकर सत्यव्यवहार-शुद्ध आहार को ग्रहण करूं, हृदयस्थ सत्य ब्रह्म को प्राप्त होऊं। यह आहुति व्रतों के स्वामी परमात्मा के लिये है, मेरे लिये नहीं ।

ओं वायो व्रतपते...शेष पूर्ववत्...**स्वाहा । इदं वायवे इदन्न मम ॥२॥**

हे वायु रूप तीव्र वेगवान् ज्ञान स्वरूप भगवन् ! शेष अर्थ पूर्ववत् । यह आहुति वायु स्वरूप ईश्वर के लिये है, मेरे लिये नहीं।

ओं सूर्य व्रतपते...शेष पूर्ववत्...**स्वाहा । इदं सूर्याय इदन्न मम ॥३॥**

हे सूर्यवत् प्रकाशमान परमात्मन् ! शेष पूर्ववत् । यह आहुति सूर्य समान परमात्मा के लिये है, मेरे लिये नहीं ।

ओं चन्द्र व्रतपते...शेष पूर्ववत्...**स्वाहा । इदं चन्द्राय इदन्न मम ॥४॥**

हे चन्द्रवत आनन्द-प्रमोददायक पिता परमेश्वर ! शेष अर्थ पूर्ववत् । यह आहुति चन्द्र समान शान्ति देने वाले परमेश्वर के लिये है, मेरे लिये नहीं ।

ओं व्रतानां व्रतपते...शेष पूर्ववत्...**स्वाहा । इदं व्रतं पतये इदन्न मम ॥५॥**

हे व्रतपति सब व्रतों के स्वामी परमपिता जगदीश्वर ! शेष अर्थ पूर्ववत् । यह आहुति व्रतों के अध्यक्ष ईश्वर के लिये है, मेरे लिये नहीं ।

अथ पितृयज्ञः

पितृयज्ञ के दो भाग हैं—(१) श्राद्ध और (२) तर्पण । श्राद्ध का अर्थ है—"**श्रद्धा-पूर्वक सेवा करना**"। तर्पण का अर्थ है—"तृप्त करना"। अर्थात् माता-पिता, दादा-दादी आदि बड़ों को भोजन-वस्त्रादि से तृप्त करके पूर्ण सेवा के द्वारा उनको सन्तुष्ट रखना ही "**पितृयज्ञ**" कहलाता है ।

अथ अतिथियज्ञः

अतिथियज्ञ का भी पंच महायज्ञ के अन्तर्गत एक विशिष्ट स्थान है । अतिथि का अर्थ है—"बिना तिथि वाला"। अर्थात् जिसके आने की कोई तिथि न हो । 'अतिथि' कौन होता है, इस सम्बन्ध में महर्षि 'ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका' तथा 'पंचमहायज्ञ विधि' में लिखते हैं—

(१) जो मनुष्य पूर्ण विद्वान्, परोपकारी, जितेन्द्रिय, धर्मात्मा, सत्यवादी, छल-कपट रहित और नित्य भ्रमण करके विद्या-धर्म का प्रचार और अविद्या-अधर्म की निवृत्ति सदा करते रहते हैं, उनको 'अतिथि' कहते हैं ।

(२) 'अतिथि' वह कहाता है कि जिसके आने-जाने की कोई तिथि दिन निश्चित न हो ।

इन दोनों परिभाषाओं के आधार पर यह कहा जा सकता है कि 'अतिथि' वह है जो विद्वान्, धर्मोपदेष्टा एवं परोपकारी हो । ऐसे विद्वान् अथवा संन्यासी आगन्तुक सत्पुरुष की श्रद्धापूर्वक सेवा करने का नाम ही 'अतिथियज्ञ' कहलाता है ।

अथ बलिवैश्वदेव यज्ञ

भोजनालय में नमकीन, तीखे और खट्टे को छोड़कर, चाहे फीका हो अथवा मीठा, उसमें से पाकाग्नि (भोजन बनाने की अग्नि) में निम्न १० मन्त्रों से आहुतियाँ प्रदान करें–

ओं अग्नये स्वाहा ॥१॥
ओं सोमाय स्वाहा ॥२॥
ओं अग्नीषोमाभ्यां स्वाहा ॥३॥
ओं विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा ॥४॥
ओं धन्वतरये स्वाहा ॥५॥
ओं कुह्वै स्वाहा ॥६॥
ओं अनुमत्यै स्वाहा ॥७॥
ओं प्रजापतये स्वाहा ॥८॥
ओं द्यावापृथिवीभ्यां स्वाहा ॥९॥
ओं स्विष्टकृते स्वाहा ॥१०॥

इसके बाद कुछ भाग निम्न मन्त्रों को पढ़कर, पृथक् थाली में निकाल करके रखें, तथा बाद में उसको किसी भी गाय, कुत्ते, कीट-पतंगादि प्राणियों को दे देवें–

ओं सानुगायेन्द्राय नमः ॥१॥ (इससे पूर्व)
ओं सानुगाय यमाय नमः ॥२॥ (इससे दक्षिण)
ओं सानुगाय वरुणाय नमः ॥३॥ (इससे पश्चिम)
ओं सानुगाय सोमाय नमः ॥४॥ (इससे उत्तर)
ओं मरुद्भ्यो नमः ॥५॥ (इससे द्वार)
ओं अद्भ्यो नमः ॥६॥ (इससे जल)
ओं वनस्पतिभ्यो नमः ॥७॥ (इससे मूसल व ऊखल)

ओं श्रियै नमः ॥८॥ (इससे ईशान)
ओं भद्रकाल्यै नमः ॥९॥ (इससे नैर्ऋत्य)
ओं ब्रह्मपतये नमः ॥१०॥
ओं वास्तुपतये नमः ॥११॥ (इनसे मध्य)
ओं विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः ॥१२॥
ओं दिवाचरेभ्यो भूतेभ्यो नमः ॥१३॥
ओं नक्तञ्चारिभ्यो भूतेभ्यो नमः॥१४॥ (इनसे ऊपर)
ओं सर्वात्मभूतये नमः ॥१५॥ (इससे पृष्ठ)
ओं पितृभ्यः स्वधायिभ्यः नमः ॥१६॥ (इससे दक्षिण)

(मनु० ३।८७-९१)

इसके पीछे छः भागों को लिखते हैं—

शुनां च पतितानां च श्वपचां पापरोगिणाम् ।
वायसानां कृमीणां च शनकैर्निर्वपेद् भुवि ॥

अर्थात्—कुत्तों, कंगालों, कुष्ठी आदि रोगियों, काक आदि पक्षियों और चींटी आदि कृमियों के लिये छः भाग अलग-अलग देना और उनकी प्रसन्नता सदा करना ।

(पूर्णिमा की आहुतियाँ)

ओं अग्नये स्वाहा ॥१॥
ओं अग्नीषोमाभ्यां स्वाहा ॥२॥
ओं विष्णवे स्वाहा ॥३॥

(अमावस्या की आहुतियाँ)

ओं अग्नये स्वाहा ॥१॥
ओं इन्द्राग्नीभ्यां स्वाहा ॥२॥
ओं विष्णवे स्वाहा ॥३॥

यज्ञोपरान्त प्रार्थना

यज्ञ की विधि समाप्त करने के बाद निम्न मन्त्रों के द्वारा प्रभु से बल-तेज आदि गुणों की प्राप्ति के लिए प्रार्थना करें-

ओं तेजोऽसि तेजो मयि धेहि ।
ओं वीर्य्यमसि वीर्य्यं मयि धेहि ।
ओं बलमसि बलं मयि धेहि ।
ओं ओजोऽसि ओजो मयि धेहि ।
ओं मन्युरसि मन्युं मयि धेहि ।
ओं सहोऽसि सहो मयि धेहि ॥१॥

ओं तनूपाऽअग्नेऽसि तन्वं मे पाहि-आयुर्दाऽअग्नेऽस्यायुर्मे देहि वर्चोदाऽअग्नेऽसि वर्च्चो मे देहि । अग्ने यन्मे तन्वाऽऊनं तन्मऽआपृण॥२॥ *(यजुः० ३।१७)*

ओं मेधां मे देवः सविता आददातु ।
ओं मेधां मे देवी सरस्वती आददातु ।
ओं मेधां मे अश्विनौ देवावाधत्तां पुष्करस्रजौ ॥३॥
ओं यत्तेऽग्ने तेजस्तेनाऽहं तेजस्वी भूयासम् ।
ओं यत्तेऽग्ने वर्चस्तेनाऽहं वर्चस्वी भूयासम् ।
ओं यत्तेऽग्ने हरस्तेनाऽहं हरस्वी भूयासम् ॥४॥

हे प्रभो ! इस परिवार को हमेशा यह वरदान दो ।
ज्ञान की गंगा बहाकर शुद्ध वैदिक ज्ञान दो ॥

निरोग रहकर सब जिएं शत वर्ष आयुष्मान् हों ।
धन-धान्य से पूरित सदा यश-युक्त कीर्त्तिमान् हों ॥

पुत्र पौत्रादिक सभी बलवान् हों, श्रीमान् हों ।
विद्वान् हों, मतिमान् हों, धर्मात्मा धीमान् हों ॥

ओ३म् असतो मा सद्गमय । तमसो मा ज्योतिर्गमय ।
मृत्योर्माऽमृतं गमय ॥

(भोजन का मन्त्र)

ओम् अन्नपतेऽन्नस्य नो देह्यनमीवस्य शुष्मिणः ।
प्र प्र दातारं तारिष ऊर्जं नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे॥
(यजुः० ११/८३)

राष्ट्रीय प्रार्थना

ओं आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायताम् ।
आ राष्ट्रे राजन्युः शूरऽइषव्योऽतिव्याधी महारथो
जायतां दोग्ध्री धेनुर्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धि-
र्योषा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो
जायतां निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो
नओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम् ॥
(यजुः० २२/२२)

ब्रह्मन् ! स्वराष्ट्र में हों, द्विज ब्रह्म-तेजधारी ।
क्षत्रिय महारथी हों, अरिदल-विनाशकारी ॥
होवें दुधारु गौएँ, पशु अश्व आशुवाही ।
आधार राष्ट्र की हों, नारी सुभग सदा ही ॥
बलवान् सभ्य योद्धा, यजमान-पुत्र होवें ।
इच्छानुसार वर्षे, पर्जन्य ताप धोवें ॥
फल-फूल से लदी हों, औषध अमोघ सारी ।
हो योग-क्षेमकारी, स्वाधीनता हमारी ॥

(यज्ञ प्रार्थना)

यज्ञरूप प्रभो ! हमारे, भाव उज्ज्वल कीजिए ।
छोड़ देवें छल-कपट को, मानसिक बल दीजिए ।।
वेद की बोलें ऋचाएँ, सत्य को धारण करें ।
हर्ष में हों मगन सारे, शोक-सागर से तरें ।।
अश्वमेधादिक रचायें, यज्ञ पर उपकार को ।
धर्म-मर्यादा चलाकर, लाभ दें संसार को ।।
नित्य श्रद्धा-भक्ति से, यज्ञादि हम करते रहें ।
रोग-पीड़ित विश्व के, सन्ताप सब हरते रहें ।।
भावना मिट जाये मन से, पाप-अत्याचार की ।
कामनाएँ पूर्ण होवें, यज्ञ से नर-नारि की ।।
लाभकारी हों हवन, हर जीवधारी के लिए ।
वायु जल सर्वत्र हो, शुभ गन्ध को धारण किये ।।
स्वार्थभाव मिटे हमारा, प्रेम-पथ विस्तार हो ।
इदं न मम का सार्थक, प्रत्येक में व्यवहार हो ।।
हाथ जोड़ झुकाये मस्तक, वन्दना हम कर रहे ।
'नाथ' करुणा रूप करुणा, आपकी सब पर रहे ।।
यज्ञरूप प्रभो ! हमारे, भाव उज्ज्वल कीजिए ।
छोड़ देवें छल-कपट को, मानसिक बल दीजिए ।।
प्रभु आत्मिक बल दीजिए ।।

त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्चसखा त्वमेव ।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वं मम देव-देव ।।

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत् ।।

सबका भला करो भगवान्,
सब पर दया करो भगवान् ।
सब पर कृपा करो भगवान्,
सबका सब विधि हो कल्याण ।।
सबको दो वेदों का ज्ञान ।
सबको दो भक्ति का दान ।।

हे ईश ! सब सुखी हों, कोई न हो दुःखारी ।
सब हों निरोग भगवन्, धन-धान्य के भण्डारी ।
सब भद्र भाव देखें, सन्मार्ग के पथिक हों ।
दुःखिया न कोई होवे, सृष्टि में प्राणधारी ।।

(प्रार्थना)

सुखी बसे संसार सब, दुखिया रहे न कोय ।
यह अभिलाषा हम सबकी, भगवन् पूरी होय ।।
विद्या-बुद्धि-तेज-बल, सबके भीतर होय ।
दूध-पूत-धन-धान्य से, वंचित रहे न कोय ।।
आपकी भक्ति-प्रेम से, मन होवे भरपूर ।
राग द्वेष से चित्त मेरा, कोसों भागे दूर ।।
मिले भरोसा आपका, हमें सदा जगदीश ।
आशा तेरे धाम की, बनी रहे मम ईश ।।
हमें बचाओ पाप से, करके दया दयाल ।
अपना भक्त बनाय के, सबको करो निहाल ।।
दिल में दया उदारता, मन में प्रेम अपार ।
धैर्य हृदय में वीरता, सबको दो करतार ।।
नारायण प्रभु आप हो, कष्ट के मोचन हार ।
दूर करो अपराध सब, कर दो भव से पार ।।
हाथ जोड़ विनती करूँ, सुनिये कृपा-निधान ।
साधु संगति-सुख दीजिये, दया-नम्रता-दान ।।
एक भरोसा आपका हमें सदा महाराज ।
बिना दया प्रभु आपके कौन संभाले काज ।।

सब वेद पढ़ें सुविचार बढ़ें, बल पाय चढ़ें नित ऊपर को ।
अविरुद्ध रहें, ऋजु पंथ गहें, परिवार कहें वसुधा भर को ।।
ध्रुव धर्म धरें, पर दुःख हरें, तन त्याग करें भवसागर को ।
दिन फेर पिता, वर दे सविता, हम आर्य करें निज जीवन को।।
दिन फेर पिता, वर दे सविता, हम आर्य करें भूमण्डल को।
विदुषी उपजें क्षमता न तजें, व्रत धार भजें सुकृति वर को ।
सधवा सुधरें, विधवा उभरें, सकलंक करें न किसी घर को ।।
दुहिता न बिकें, कुटनी न टिकें, नेता न भरें निज-निज घर को ।
दिन फेर पिता, वर दे सविता, कर दे कविता कविशंकर को।।

(भजन–१)

हम सब मिलकर दाता आये तेरे दरबार ।
भर दे झोली सबकी तेरे पूरण भण्डार ।।

होवे जब सन्ध्या काल निर्मल होके तत्काल ।
अपना मस्तक झुका के करके तेरा ख़याल ।
तेरे दर पे आके बैठे सारा परिवार ।।१।।

लेके दिल में फरियाद करते हम तुमको याद ।
जब हों संकट की घड़ियाँ माँगें तुमसे इम्दाद ।
सबसे बढ़कर जग में तेरा ऊँचा आधार ।।२।।

चाहे दिन हों विपरीत होवे तुमसे ही प्रीति ।
पूरी श्रद्धा से गायें तेरी भक्ति के गीत ।
होवे सबका प्रभुजी तेरे चरणों में प्यार ।।३।।

तू हैं दुनियाँ का वाली करता सबकी रखवाली ।
हम हैं रंग–रंग के पौधे तू है हम सबका माली ।
'पथिक' बगीचा है यह तेरा सुन्दर संसार ।।४।।

(भजन–२)

शरण प्रभु की आओ रे, यही समय है प्यारे ।।

छल–कपट और झूठ को त्यागो, सत्य में चित्त लगाओ रे ।।
उदय हुआ ओम् नाम का भानु, आओ दर्शन पाओ रे ।।
पान करो इस अमृत रस का, उत्तम पदवी पाओ रे ।।
प्रभु की भक्ति बिन नहीं मुक्ति, दृढ़ विश्वास जमाओ रे ।।
मानुष जन्म अमोल है प्यारे, वृथा न इसे गंवाओ रे ।।
कर लो प्रभु–नाम का सुमिरन, अन्त को न पछताओ रे ।।
धन्य दया जो सबको पाले, मत उसको बिसराओ रे ।।
छोटे–बड़े सब मिलके खुशी से, गुण ईश्वर के गाओ रे ।।

(भजन-३)

आज मिल सब गीत गाओ उस प्रभु के धन्यवाद ।
जिसका यश नित गाते हैं गन्धर्व मुनिजन धन्यवाद ।।

मन्दिरों में कन्दरों में पर्वतों के शिखर पर ।
देते हैं लगातार सौ-सौ बार मुनिवर धन्यवाद ।।

करते हैं जंगल में मंगल पक्षिगण हर शाख पर ।
पाते हैं आनन्द मिल गाते हैं स्वर भर धन्यवाद ।।

कूप में तालाब में सिन्धु की गहरी धार में ।
प्रेम-रस में तृप्त हो करते हैं जलचर धन्यवाद ।।

शादियों में कीर्तनों में यज्ञ और उत्सव के बाद ।
मीठे स्वर से चाहिए करें नारी-नर सब धन्यवाद ।।

गान कर *'अमीचन्द'* भजनानन्द ईश्वर स्तुति ।
ध्यान धर सुनते हैं श्रोता कान धर-धर धन्यवाद ।।

(भजन-४)

पितु मातु सहायक स्वामी सखा, तुम ही एक नाथ हमारे हो।
जिनके कछु और आधार नहीं, तिनके तुम ही रखवारे हो ।।
सब भांति सदा सुखदायक हो, दुःख-दुर्गुण नाशन हारे हो ।
प्रतिपाल करो सिगरे जग को, अतिशय करुणा उर धारे हो ।।
भुलि हैं हम ही तुमको तुम तो, हमरी सुधि नाहिं बिसारे हो।
उपकारन को कुछ अन्त नहीं, छिन ही छिन जो विस्तारे हो।।
महाराज महा महिमा तुम्हारी, समझें विरले बुधवारे हो ।
शुभ शान्ति निकेतन प्रेमनिधे, मन मन्दिर के उजियारे हो ।।
इस जीवन के तुम जीवन हो, इन प्राणन के तुम प्यारे हो ।
तुम सों प्रभु पाय *'प्रताप'* हरि, केहि के अब और सहारे हो।।

(भजन–५)

होता है सारे विश्व का कल्याण यज्ञ से ।
जल्दी प्रसन्न होते हैं, भगवान् यज्ञ से ।।
ऋषियों ने ऊँचा माना है, स्थान यज्ञ का ।
भगवान् का यह यज्ञ है, भगवान् यज्ञ का ।
करते हैं दुनिया वाले सब सम्मान यज्ञ का ।
दर्जा है तीनों–लोक में महान् यज्ञ का ।
जाता है देवलोक में इन्सान यज्ञ से ।।१।।
जो कुछ भी डालो यज्ञ में खाते हैं अग्निदेव ।
सबको प्रसाद यज्ञ का, पहुंचाते अग्निदेव ।
बदले में एक के अनेक, दे जाते अग्निदेव ।
बादल बनकर भूमि पर, बरसाते अग्निदेव ।
पैदा अनाज होता है, महान् यज्ञ से ।।२।।
शक्ति और तेज–यश भरा, इस शुद्ध नाम में ।
साक्षी यही है विश्व के, हर नेक काम में ।।
पूजा है इसको कृष्ण और भगवान् राम ने ।
होता है कन्यादान भी, इसके ही सामने ।
मिलता है राज्य, कीर्ति, सन्तान यज्ञ से ।।३।।
सुख–शान्तिदायक मानते हैं, सब मुनि इसे ।
वशिष्ठ, विश्वामित्र और नारद मुनि इसे ।
इसका पुजारी कोई भी पराजित नहीं होता ।
भय यज्ञकर्त्ता को कभी किञ्चित् नहीं होता ।।
होती हैं सारी मुश्किलें आसान यज्ञ से ।।४।।
चाहे अमीर है कोई चाहे ग़रीब है ।
जो नित्य यज्ञ करता है, वह खुशनसीब है ।
हम सब में रहे, सर्वदा यज्ञीय भावना ।
ज़ख्मी की सच्चे दिल से है यह श्रेष्ठ कामना ।
होती हैं पूर्ण कामना, महान् यज्ञ से ।।५।।

(भजन-६)

हे दयामय हम सबों को शुद्धताई दीजिए ।
दूर करके हर बुराई को भलाई दीजिए ।।

कीजिए ऐसा अनुग्रह हम पै हे परमात्मा ।
हों सभासद् इस सभा के सबके सब धर्मात्मा ।।१।।

हो उजाला सबके मन में ज्ञान के प्रकाश से ।
और अंधेरा दूर सारा हो अविद्या नाश से ।।२।।

खोटे कर्मों से बचें और तेरे गुण गावें सभी ।
छूट जावें दुःख सारे, सुख सदा पावें सभी ।।३।।

सारी विद्याओं को सीखें ज्ञान से भरपूर हों ।
शुभ कर्म में होवें तत्पर दुष्ट गुण सब दूर हों ।।४।।

यज्ञ-हवन से हो सुगन्धित अपना भारतवर्ष देश ।
वायु-जल सुखदायी हों जाएँ मिट सारे क्लेश ।।५।।

वेद के प्रचार में होवें सभी पुरुषार्थी ।
होवे आपस में प्रीति और बनें परमार्थी ।।६।।

लोभी, कामी और क्रोधी कोई भी हम में न हो ।
सर्व व्यसनों से बचें और छोड़ देवें मोह को ।।७।।

अच्छी संगत में रहें और वेद-मारग पर चलें ।
तेरे ही होवें उपासक और कुकर्मों से बचें ।।८।।

कीजिए हम सबका हृदय शुद्ध अपने ज्ञान से ।
मान भक्तों में बढ़ाओ अपने भक्ति-दान से ।।९।।

(भजन-७)

दयाकर दान भक्ति का, हमें परमात्मा देना ।
दया करना हमारी आत्मा में शुद्धता देना ।।

हमारे ध्यान में आओ, प्रभू आंखों में बस जाओ ।
अंधेरे दिल में आ करके, परमज्योति जगा देना ।।
बहा दो प्रेम की धारा, दिलों में प्रेम का सागर ।
हमें आपस में मिल-जुलकर, प्रभो रहना सिखा देना ।।
हमारा कर्म हो सेवा, हमारा धर्म हो सेवा ।
सदा ईमान हो सेवा, व सेवकचर बना देना ।।
वतन के वास्ते जीना, वतन के वास्ते मरना ।
वतन पर जाँ फिदा करना, प्रभो हमको सिखा देना ।।

(भजन-८)

अब सौंप दिया इस जीवन का, सब भार तुम्हारे हाथों में ।
है जीत तुम्हारे हाथों में, और हार तुम्हारे हाथों में ।।
मेरा निश्चय है एक यही, इक बार तुम्हें पा जाऊं मैं ।
अर्पण कर दूं जगती भर का, सब प्यार तुम्हारे हाथों में ।।
या तो मैं जग से दूर रहूं, और जग में रहूं तो ऐसे रहूं ।
इस पार तुम्हारे हाथों में, उस पार तुम्हारे हाथों में ।।
यदि मानुष ही मुझे जन्म मिले, तो तव चरणों का पुजारी बनूं ।
मुझ पूजक की इक-इक रग का, हो तार तुम्हारे हाथों में ।।
जब-जब संसार का बन्दी बन, दरबार तेरे में आऊं मैं ।
तब-तब हो पापों का निर्णय, सरकार तुम्हारे हाथों में ।।
मुझमें तुझमें है भेद यही, मैं नर हूं तुम नारायण है ।
मैं हूं संसार के हाथों में, संसार तुम्हारे हाथों में ।।

(भजन–९)

ओ३म् है जीवन हमारा, ओ३म् प्राणाधार है ।
ओ३म् है कर्त्ता विधाता, ओ३म् पालनहार है ।।

ओ३म् है दुःख का विनाशक, ओ३म् सर्वानन्द है ।
ओ३म् है बल-तेजधारी, ओ३म् करुणाकन्द है ।।

ओ३म् सबका पूज्य है, हम ओ३म् का पूजन करें ।
ओ३म् ही के ध्यान से, हम शुद्ध अपना मन करें ।।

ओ३म् के गुरु-मन्त्र जपने से, रहेगा शुद्ध मन ।
बुद्धि दिन-प्रतिदिन बढ़ेगी, धर्म में होगी लगन ।।

ओ३म् के जप से हमारा, ज्ञान बढ़ता जायेगा ।
अन्त में यह ओ३म् हम को, मुक्ति तक पहुंचायेगा ।।

(भजन–१०)

विधाता तू हमारा है, तु ही विज्ञान दाता है ।
बिना तेरी दया कोई, नहीं आनन्द पाता है ।।

तितिक्षा की कसौटी पर, जिसे तू जाँच लेता है ।
उसी शिक्षाधिकारी को अविद्या से छुड़ाता है ।।

सताता जो न औरों को, न धोखा आप खाता है ।
वही सद्भक्त है तेरा, सदाचारी कहाता है ।।

सदा जो न्याय का प्यारी, प्रजा को दान देता है ।
महाराजा उसी को तू, बड़ा राजा बनाता है ।।

तजे जो धर्म को धारा, कुकर्मों की बहाता है ।
न ऐसे नीच पापी को, कभी ऊँचा चढ़ाता है ।।

स्वयंभू *'शंकरानन्दी'*, तुझे जो जान लेता है ।
वही कैवल्य सत्ता की, महत्ता में समाता है ।।

(भजन-११)

ईश्वर तुम्हीं दया करो, तुम बिन हमारा कौन है ।
दुर्बलता दीनता हरो, तुम बिन हमारा कौन है ।।

जग के बनाने वाला तू, दुःख के मिटाने वाला तू ।
बिगड़ी बनाने वाला तू, तुम बिन हमारा कौन है ।।

माता तू ही तू ही पिता, बन्धु तू ही तू ही सखा ।
केवल तुम्हारा आसरा, तुम बिन हमारा कौन है ।।

तेरा भजन तेरा मनन, तेरी ही धुन तेरी लगन ।
तेरी शरण में आये हम, तुम बिन हमारा कौन है ।।

तेरी दया को छोड़कर, कुछ भी नहीं हमें खबर ।
जायें तो जायें हम किधर, तुम बिन हमारा कौन है ।।

बालक सभी हैं हम तेरे, तू है पिता परमात्मा ।
हर पर हो बस तेरी दया, तुम बिन हमारा कौन है ।।

(भजन-१२)

कहां हो मां !!! तुझे तेरे दुलारे याद करते हैं ।
ये टुकड़े जिग़र के, आंखों के तारे याद करते हैं ।।

यहां हर चीज़ मिलती है, मगर एक मां नहीं मिलती ।
बिछुड़ जाती है मां जिनकी, वो सारे याद करते हैं ।।

जहां भी तू गई है मां, वहां से दौड़कर आ जा ।
तेरी गोदी में जो भी पल, गुजारे याद करते हैं ।।

कहां बाहों का वह झूला, कहां वह गोद मखमल की ।
दिये बचपन में जो तूने, सहारे याद करते हैं ।।

यहां यदि मां नहीं होती, तो ये संसार न होता ।
तेरे आशीष ने तन-मन, संवारे याद करते हैं ।।

तेरे इस बाग़ की नन्हीं-सी कलियां रो रही हैं मां ।
तुझे मासूम हाथों के, इशारे याद करते हैं ।।

तेरा परिवार-रिश्तेदार सब व्याकुल बिलखते हैं ।
तेरे आशीष ने तन-मन, संवारे याद करते हैं ।।

१३–करते जाना प्यार

ईश्वर से करते जाना प्यार, ओ नादान मुसाफिर ।
नैया को करते जाना पार, ओ नादान मुसाफिर ।।....
प्रीति ना तोड़ देना, हिम्मत ना छोड़ देना ।
वरना तू डूबेगा मंझधार, ओ नादान मुसाफिर ।।....
जीवन में खुशबू भर ले, जग को सुगन्धित कर ले ।
करना जो चाहे मौज बहार, ओ नादान मुसाफिर ।।....
श्रेष्ठों की संगत करना, बदियों से हरदम डरना ।
जीते जी करना उपकार, ओ नादान मुसाफिर ।।....
जब तक है जोशे जवानी, बिगड़ी हर बात बनानी ।
होने न पावे अत्याचार, ओ नादान मुसाफिर ।।....
ऋषियों की शान रखना, भारत की आन रखना ।
देना हो सर भी देना वार, ओ नादान मुसाफिर ।।....
जीवन अनमोल हीरा, मिट्टी में ना रोली वीरा ।
तुम को समझाया बारबार, ओ नादान मुसाफिर ।।....

१४–भरोसा कर तू ईश्वर पर

भरोसा कर तू ईश्वर पर तुझे धोखा नहीं होगा ।
यह जीवन बीत जायेगा तुझे रोना नहीं होगा ।।

कभी सुख है कभी दुःख है यह जीवन धूप छाया है ।
हंसी में ही बिता डालो बितानी ही यह माया है ।।
जो सुख आवे तो हंस देना जो दुःख आवे तो सह लेना ।
न कहना कुछ कभी जग से प्रभु से ही तू कह लेना ।।
यह कुछ भी तो नहीं जग में तेरे बस, कर्म की माया ।
तू खुद ही धूप में बैठा लखे निज रूप की छाया ।।
कहां ये था कहां तू था कभी तो सोच ए बन्दे ।
झुका कर शीश को कह दे प्रभु वन्दे प्रभु वन्दे ।।

१५—यज्ञ सफल हो जाये

यज्ञ सफल हो जाये भगवन् ।
मेरा यज्ञ सफल हो जाये भगवन् ।।

श्रद्धा से यह यज्ञ रचाया ।
वेदी को है खूब सजाया ।।
पवन शुद्ध हो जाये भगवन् ।
यज्ञ सफल हो जाये ।।१।।

घृत सामग्री शुद्ध चढ़ाया ।
मेवा चन्दन मिष्ट मिलाया ।।
रोग-शोक मिट जाये भगवन् ।
यज्ञ सफल हो जाये ।।२।।

यज्ञ सुगन्धी जहाँ भी जाए ।
जीव मात्र को सुख पहुंचाए ।।
सब के मन को भाए भगवन् ।
यज्ञ सफल हो जाये ।।३।।

श्रेष्ठ कर्म है यज्ञ बताया ।
यथा शक्ति मैं जो कर पाया ।।
ब्रह्मार्पण हो जाये भगवन् ।
यज्ञ सफल हो जाये ।।४।।

राग-द्वेष का दोष मिटाया ।
प्रेम भाव का कोष चढ़ाया ।।
यज्ञ-योग बन जाये भगवन् ।
यज्ञ सफल हो जाये ।।५।।

यज्ञ यज्ञपति को मिल जाये ।
पूर्ण कामना तब हो जाये ।।
दिव्याशीष दिलाए भगवन् ।
यज्ञ सफल हो जाये ।।६।।

१६–तेरे दर को छोड़कर

तेरे दर को छोड़कर, किस दर जाऊं मैं ।
सुनता मेरी कौन है, किसे सुनाऊं मैं ।।

जब से याद भुलाई तेरी, लाखों कष्ट उठाये हैं ।
क्या जानूं इस जीवन अन्दर कितने पाप कमाये हैं ।।
हूं शर्मिन्दा आपसे, क्या बतलाऊं मैं ।। तेरे०।।

मेरे पाप-कर्म ही तुझसे प्रीति न करने देते हैं ।
कभी जो चाहूं मिलूं आपसे, रोक मुझे ये लेते हैं ।।
कैसे स्वामी आपके दर्शन पाऊं मैं ।।तेरे०।।

है तू नाथ ! वरों का दाता, तुझ से सब वर पाते हैं ।
ऋषि-मुनि और योगी सारे तेरे ही गुण गाते हैं ।।
छींटा दे दो ज्ञान का, होश में आऊं मैं ।।तेरे०।।

जो बीती सो बीती लेकिन बाकी उमर संभालूं मैं ।
प्रेमपाश में बंधा आपके गीत प्रेम के गा लूं मैं ।।
जीवन प्यारे 'देश' का सफल बनाऊं मैं ।। तेरे०।।

१७–अजब हैरान हूँ भगवन्

अजब हैरान हूं भगवन् ! तुम्हें क्योंकर रिझाऊं मैं ।
कोई वस्तु नहीं ऐसी जिसे सेवा में लाऊं मैं ।। अजब०।।

करें किस तौर आवाहन कि तुम मौजूद हो हर जा ।
निरादर है बुलाने को अगर घण्टी बजाऊं मैं ।। अजब०।।

तुम्हीं हो मूर्त्ति में भी, तुम्हीं व्यापक हो फूलों में ।
भला भगवान् पर भगवान् को क्योंकर चढ़ाऊं मैं ।। अजब०।।

लगाना भोग कुछ तुमको यह एक अपमान करना है ।
खिलाता है जो सब जग को, उसे कैसे खिलाऊं मैं ।। अजब०।।

तुम्हारी ज्योति से रोशन हैं सूरज, चांद और तारे ।
महा अन्धेर है कैसे, तुम्हें दीपक दिखाऊं मैं ।। अजब०।।

भुजाएँ हैं न गर्दन है, न सीना है न पेशानी ।
तुम हो निर्लेप नारायण ! कहां चन्दन लगाऊं मैं ।। अजब०।।

बड़े नादान हैं वे जन जो घड़ते आपकी मूरत ।
बनाता है जो सब जग को उसे क्योंकर बनाऊं मैं ।। अजब०।।

१८—तेरे नाम का सुमिरन

तेरे नाम का सुमिरन करके, मेरे मन में सुख भर आया ।
तेरी कृपा को मैंने पाया, तेरी दया को मैंने पाया ।।

दुनिया की ठोकर खाकर, जब हुआ कभी बेसहारा ।
ना पाकर अपना कोई, जब मैंने तुम्हें पुकारा ।।
हे नाथ ! मेरे सिर ऊपर, तूने अमृत बरसाया ।।१।।

तू संग में था नित मेरे, ये नैना देख न पाए ।
चंचल माया के रंग में, ये नैन रहे उलझाए ।।
जितनी भी बार गिरा हूँ तू ने पग-पग मुझे उठाया ।।२।।

भवसागर की लहरों में, भटकी जब मेरी नैया ।
तट छूना भी मुश्किल था नहीं मिले कोई खिवैया ।।
तू लहर बना सागर की, मेरी नाव किनारे लाया ।।३।।

हर तरफ तुम्हीं हो मेरे, हर तरफ तेरा उजियारा ।
निर्लेप प्रभु जी मेरे, हर रूप तुम्हीं ने धारा ।।
तेरी शरण में होके दाता, तेरा तुम ही को चढ़ाया ।।४।।

१९—मेरे दाता के दरबार में

मेरे दाता के दरबार में सब लोगों का खाता ।
जो कोई जैसी करनी करता, वैसा ही वह पाता ।।

क्या साधु, क्या सन्त गृहस्थी, क्या राजा क्या रानी,
प्रभु की पुस्तक में लिखी है सब की कर्म कहानी ।
अन्तर्यामी अंदर बैठा, सब का हिसाब लगाता ।।१।।
बड़ा-बड़े कानून प्रभु के बड़ी-बड़ी मर्यादा,
किसी को कौड़ी कम नहीं मिलती, मिले न पाई ज्यादा ।
इसीलिए वह दुनिया का जगत्पति कहलाता ।।२।।
चले न उस के आगे रिश्वत चले नहीं चालाकी,
उस की लेन-देन की बंदे रीति बड़ी है बांकी ।
समझदार तो चुप है रहता, मूरख शोर मचाता ।।३।।
उजली करनी कर ले बन्दे कर्म न करयो काला,
लाख आंख से देख रहा है तुझे देखने वाला ।
उसकी तेज नजर से बंदे, कोई नहीं बच पाता ।।४।।

२०—प्रभु आज्ञा को पालना

मेरा उद्देश्य हो प्रभु, आज्ञा को तेरी पालना ।
कर-कर कमाई धर्म की, अर्पण तेरे कर डालना ।।
मानव के नाते से पिता, जाऊँ कभी जो भूल मैं ।
इतनी विनय है आपसे, बन के सखा संभालना ।।
जितने भी श्रेष्ठ कर्म हैं, श्रद्धा व प्रेम से करूँ ।
आएँ अभद्र भाव जो, उनको सदा ही टालना ।।
रक्षा मेरी जो तुम करो, रक्षा तेरी में मैं रहूँ ।
अपने गुणों के साँचे में, जीवन को मेरे ढालना ।।
मृत्यु का मुझ को भय न हो, माँगूं यही वरदान मैं ।
मेधा, बुद्धि की भिक्षा को, झोली में मेरी डालना ।।

२१—कोई कारण होगा

इक झोली में फूल भरे हैं
इक झोली में कांटे रे,
कोई कारण होगा ।
तेरे बस में कुछ भी नहीं
ये तो बांटने वाला बांटे रे,
कोई कारण होगा……
पहले बनती हैं तकदीरें,
फिर बनते हैं शरीर ।
ये प्रभु की है कारीगरी
तू है क्यों गम्भीर ।।
अरे कोई कारण होगा……
नाग भी डस ले तो मिल जाये,
किसी को जीवन दान ।
चींटी से भी मिट सकता है,
किसी का नामो निशान ।।
अरे कोई कारण होगा……
धन का बिस्तर मिल जाये पर
नींद को तरसे नैन ।
कांटों पर सोकर भी आये,
किसी के मन को चैन ।।
अरे कोई कारण होगा……
सागर से भी बुझ सकती नहीं
कभी किसी की प्यास ।
कभी एक ही बूंद से हो जाती पूर्ण आस ।
अरे कोई कारण होगा……

२२–परमपिता से प्यार नहीं

परमपिता से प्यार नहीं, शुद्ध रहा व्यवहार नहीं ।
इसीलिये तो आज देखलो, सुखी कोई परिवार नहीं ।।

फल और फूल अन्न इत्यादि, समय-समय पर देता है ।
लेकिन है आश्चर्य यही एक, बदले में कुछ नहीं लेता है ।।
भेद भाव तकरार नहीं पा सकता कोई पार नहीं ।
ऐसे दानी का ओ बन्दे माने तू उपकार नहीं ।।१।।

मानव चोले में ना जाने, कितने यन्त्र लगाए हैं ।
कीमत कोई माप सके ना, ऐसे अमूल्य बनाए हैं ।।
अंग कोई बेकार नहीं, पा सकता कोई पार नहीं ।
ऐसे कारीगर का मानव, पा सकता कोई पार नहीं ।।२।।

जल, अग्नि और वायु का वह, लेता नहीं किराया है ।
सर्दी, गर्मी, वर्षा का अति, सुन्दर चक्र चलाया है ।।
लगा नहीं दरबार कहीं, कोई सिपाही सलाहकार नहीं ।
कर्मों का फल देता सबको, रिश्वत की सरकार नहीं ।।३।।

सूर्य, चन्द्र अरु तारों का, न जाने कहां बिजली घर बना हुआ।
पलभर भी नहीं धोखा देते, कहां कनक्शन लगा हुआ ।।
खम्बा और तार नहीं, खड़ी कहीं दीवार नहीं ।
ऐसे शिल्पकार का नर तू करता जरा विचार नहीं ।।४।।
परमपिता से......

२३—प्रभु प्यारे से जिसका सम्बन्ध है

प्रभु प्यारे से जिसका सम्बन्ध है ।
उसे हरदम आनन्द ही आनन्द है ।।

झूठी ममता से करके किनारा, ले के सच्चे पिता का सहारा
जो उसकी रज़ा में रज़ामन्द है, उसे हरदम आनन्द ही आनन्द है

जिसकी कथनी में कोयल सी चहक है,
जिसकी करनी में फूलों सी महक है ।।

प्रेम नर्मी ही जिसकी सुगन्ध है, उसे हरदम......

निन्दा चुगली न जिसको सुहावे बुरी संगसत की रंगत न भावे
सत्संगत ही जिसको पसन्द है, उसे हरदम......

दीन दुःखियों के दुःख जो बँटावे, बनके 'सेवक' भला सबका चाहे
नहीं जिसमें घमण्ड और पाखण्ड है, उसे हरदम......

२४—हे सुख शान्ति निकेतन हे

हे जग त्राता विश्व विधाता
हे सुख शान्ति निकेतन है ।

प्रेम के सिन्धो दीन के बन्धो
दुःख दारिद्रय विनाशन है ।

नित्य अनन्त अखण्ड अनादि
पूरण ब्रह्म सनातन हे ।

जग आश्रय जगपति जग बन्दन
अनुपम अलख निरंजन हे ।

प्राण सखा त्रिभुवन प्रति पालक
जीवन के अवलम्बन हे ।।

२५–ऋण चुका सकते नहीं

हम कभी माता–पिता का ऋण चुका सकते नहीं ।
इनके तो एहसान हैं इतने गिना सकते नहीं ।।

यह कहां पूजा में शक्ति यह कहां फल जाप का,
हो तो हो इनकी कृपा से खातमा संताप का ।
इनकी सेवा से मिले धन, ज्ञान, बल, लम्बी उमर,
स्वर्ग से बढ़कर है जग में आसरा मां बाप का ।
इनकी तुलना में कोई वस्तु भी ला सकते नहीं ।।
हम कभी...

देख लें हम को दुःखी तो भरले अपने नैन यह ।
इक हमारे सुख की खातिर तड़पते दिन रैन यह ।
भूख लगती प्यास न और नींद भी आती नहीं,
कष्ट हो तन पे हमारे हो उठें बेचैन यह ।
इनसे बढ़कर देवता भी सुख दिला सकते नहीं ।।
हम कभी...

पढ़ लो वेद और शास्त्र का ही एक यह भी मर्म है ।
योग्यतम सन्तान का यह सबसे उत्तम कर्म है ।
जगत् में जब तक जिये सेवा करें मां बाप की,
इनके चरणों में यह तन–मन–धन लुटाना धर्म है ।
यह पथिक वो सत्य है जिसको झुठला सकते नहीं ।।
हम कभी...

२६—सबके गुण, अपनी हमेशा गल्तियाँ देखा करो

सबके गुण अपनी हमेशा, गल्तियाँ देखा करो ।
ज़िन्दगी की हू-बहू तुम, झलकियाँ देखा करो ।।
हसरतें महलों की गर, तुमको सताएँ आन कर ।
कुछ गरीबों की भी जा कर, बस्तियाँ देखा करो ।।
खाने से पहले अगर तुम, हक पराया सोच लो ।
कितने भूखों की है इनमें, रोटियाँ देखा करो ।।
आ दबोचे ग़र कहीं, तुम को सिकन्दर का ग़रूर ।
हाथ ले खाली आते-जाते, अर्थियाँ देखा करो ।।
ये जवानी की अकड़ सब, ख़ाक में मिल जाएगी ।
जल चुके जो शव हैं उनकी, अस्थियाँ देखा करो ।।
विषयों की विषपान कर, झूठे नशे में चूर हो ।
प्रभु नाम का इक जाम पीकर, मस्तियाँ देखा करो ।।
ज़िन्दगी में चाहते हो, सुख अगर अपने लिए ।
दूसरों के गम में अपने, सिसकियाँ देखा करो ।।

२७—विश्वपति के ध्यान में

विश्वपति के ध्यान में जिसने लगाई हो लगन ।
क्यों न हो उसको शान्ति, क्यों न हो उसका मन मगन ।।
काम, क्रोध, लोभ, मोह, शत्रु है महाबली ।
इनके हनन के वास्ते, जितना हो तुझ से कर यतन ।।
जैसा किसी का हो अमल, वैसा ही पाता है वो फल ।
दुष्टों को कष्ट मिलता है, श्रेष्ठों का होता दुख हरण ।।
ऐसा बना स्वभाव को, चित्त की शान्ति से ।
पैदा न हो ईर्ष्या का आग, मन में न हो कभी जलन ।।
आप दया स्वरूप हैं, आप का ही आसरा ।
कृपा की दृष्टि कीजिए, मुझ पे हो जब समय कठिन ।।
मन में मेरे हो चाँदना, मोक्ष का रस्ता मिले ।
मार के मन को वश में रख, इन्द्रियों का कर दमन ।।

२८—प्रभु नाम का सहारा

लिया जिन्दगी में जिसने प्रभु नाम का सहारा ।
किश्ती जो थी भंवर में, उसे मिल गया किनारा ।।
सूरज वा चाँद तारे, आकाश में सजाए ।
ब्रह्माण्ड की ये रचना, कुदरत का है नजारा ।।
उसकी शरण में जाके, दुखों से छूट जाएँ ।
माता-पिता वही है, बन्धु सखा हमारा ।।
मानव जनम को पाके, बाजी को हम ने जीता ।
विषयों में फँस के जीती बाज़ी को हम ने हारा ।।
जीवन में भारती को, जब संकटों ने घेरा ।
तब उसकी रहमतों ने, सब रंजो-गम को टारा ।।
खाली गया न उसके दर से कोई सवाली ।
दीनों का नाथ है वो, निर्बल का है सहारा ।।

२९—माँग उस भगवान से

माँग बन्दे माँग उस भगवान से ।
क्या मिलेगा माँग कर इन्सान से ।।
मिल गया जो ज़िन्दगी की राह में ।
सब को ना दाता समझ अज्ञान से ।।
है वही सारे ज़माने का पिता ।
उसका ही दामन पकड़ जी-जान से ।।
देख ले घर में ही बैठा है कोई ।
मिल ज़रा इक बार उस मेहमान से ।।
कब कहोगे श्रीमान बैठोगे कहाँ ।
भर लिया कश्ती को जब सामान से ।।
छोड़ सुपथ को क्यों कुपथ पर चल पड़ा ।
हो गई गलती 'पथिक' नादान से ।।

३०—नाम उसी का लिया करो

ओम् का सिमरन किया करो,
प्रभु के सहारे जिया करो ।
जो दुनिया का मालिक है,
नाम उसी का लिया करो ।।

सुर दुर्लभ तन तू ने बड़े भाग्य से पाया है ।
विषयों में फंस करके बन्दे हीरा जन्म गंवाया है ।।
दुष्ट संग न किया करो,
सज्जनों से गुण लिया करो ।
जो दुनिया का मालिक है,
नाम उसी का लिया करो ।।१।।

पता नहीं कब रुक जाए चलते-चलते वासा ।
इक क्षण में सब खत्म हो जाए जग का सभी तमाशा ।।
सुबह शाम जप किया करो,
याद प्रभु को किया करो ।
जो दुनिया का मालिक है,
नाम उसी का लिया करो ।।२।।

हर प्राणी से प्यार किया करो बस सब में वही समाया है ।
मिलकर रहना सब हैं अपने कोई नहीं पराया है ।।
द्वेष भाव न किया करो,
दुःख न किसी को दिया करो ।
जो दुनिया का मालिक है,
नाम उसी का लिया करो ।।३।।

सच्चा सुख है प्रभु-भक्ति में बात न समझो झूठी ।
वही अमर पद पाते, जो पीते नाम की बूटी ।।
प्रभु नाम रस पिया करो,
राघव भूल न किया करो ।
जो दुनिया का मालिक है,
नाम उसी का लिया करो ।।४।।

३१–ज्योति जला के देख

भीतर है सखा तेरा, तू मन टिका के देख ।
अन्त:करण में ज्ञान की ज्योति जला के देख ।।
हैं इन्द्रियों की शक्तियां बाहर की ओर जो ।
बाहर की ओर से इन्हें भीतर को मोड़ दो ।।
कर दो सकल बन्द समाधि लगा के देख ।।१।।
शुद्ध आत्मा से उसकी तू रचना का ध्यान कर ।
निश्चय ही झूम जाएगा महिमा का गान कर ।।
श्रद्धा की देवी रूठी हुई है मना के देख ।।२।।
साथी पवित्र देव है बिगड़ी बने न क्यों ।
जीवन यह तेरा भक्ति, रस में सने न क्यों ।।
भांति आदर्श भक्तों की, जीवन बिना के देख ।।३।।
मिलता है सखा तेरा इस ही उपाय से ।
मिलता नहीं कदापि वो अन्यत्र जाए से ।।
सन्तों की वाणी को तू आजमा के देख ।।४।।

३२–पार नहीं पाया

तेरा पार किसी ने पाया नहीं ।
तू दृष्टि किसी की भी आया नहीं ।।
न कोई खास मुकाम तुम्हारा,
जिधर किधर तेरा चमकारा ।
नस नाड़ी बंधन से न्यारा,
माता–पिता सुत, जाया नहीं ।।१।।
बिना हाथों यह जगत् रचाया,
पात–पात में आप समाया ।
नाना विधि फलफूल उगाया,
तुझ को किसी ने बनाया नहीं ।।२।।

अनन्त अपार वेदों ने गाया,
रचना देख चकित तेरी माया ।
जो भक्त तेरे दर पे आया,
उस को रिक्त लौटाया नहीं ।।३।।

३३–अच्छा ही करता है

ईश्वर जो कुछ करता है अच्छा ही करता है ।
मानव तू परिवर्तन से काहे को डरता है ।।

जब से दुनिया बनी है तब से रोज बदलती है ।
जो शै आज यहां है कल वो आगे चलती है ।।
देख के अदला बदली तू आहें क्यों भरता है ।
ईश्वर जो कुछ करता है......

दुःख सुख आते जाते रहते सब के जीवन में ।
पतझड़ और बहारें दोनों जैसे गुलशन में ।।
चढ़ता है तूफान कभी और कभी उतरता है ।
ईश्वर जो कुछ करता है......

कितनी लम्बी रात हो फिर भी दिन तो आएगा ।
जल में कमल खिलेगा फिर से वो मुस्काएगा ।।
देता है जो कष्ट वही कष्टों को हरता है ।
ईश्वर जो कुछ करता है......

वो ही दाना फलता है जो मिट्टी में मिल जाए ।
सहे "पथिक" जो कांटे वो ही मंजिल अपनी पाए ।।
भट्टी में पड़ कर सोने का रंग निखरता है ।
ईश्वर जो कुछ करता है......

३४—उन्हीं की चिन्ता मिटी

जगत् में उनकी मिटी है चिन्ता, जो तेरे चरणों में आ गये हैं ।
वही हमेशा हरे भरे हैं, जो तेरे चरणों में आ गये हैं ।।
न पाया राजा वजीर बनकर ।
न पाया तुझ को फकीर बनकर ।।
उन्हीं को दर्शन हुए हैं तेरे, जो तेरे चरणों में आ गये हैं ।।
न पाया तुझ को किसी ने बल से ।
न पाया तुझ को किसी ने धन से ।।
वही परमपद को पा गये हैं, जो तेरे चरणों में आ गये हैं ।।
किसी ने जग में करी भलाई ।
किसी ने जग में करी बुराई ।।
वो ही सुमार्ग पर चल पड़े हैं, जो तेरे चरणों में आ गये हैं ।।
प्रभु जी विनति सुनो हमारी ।
सुधारो बिगड़ी दशा हमारी ।।
निराश्रितों के तुम आसरा हो, तुम्हारे चरणों में आ गये हैं ।।

३५—उलझ मत

उलझ मत दिल बहारों में, बहारों का भरोसा क्या ।
सहारे टूट जाते हैं, सहारों का भरोसा क्या ।।

तमन्नाएँ जो तेरी हैं, फुहारें हैं ये सावन की ।
फुहारें सूख जाती हैं, फुहारों का भरोसा क्या ।।१।।

दिलासे जो जहां के हैं, सभी रंगी बहारें हैं ।
बहारें रूठ जाती हैं, बहारों का भरोसा क्या ।।२।।

तू सम्बल नाम का लेकर, किनारों से किनारा कर ।
किनारे टूट जाते हैं, किनारों का भरोसा क्या ।।३।।

अगर विश्वास करना है, तो कर दुनिया के मालिक पर ।
धनी अभिमानी लोभी दुनियादारों का भरोसा क्या ।।४।।

तूँ अपनी अक्लमंदी पर, विचारों पर न इतराना ।
जो लहरों की तरह चंचल, विचारों का भरोसा क्या ।।५।।

परम प्रभु की शरण लेकर, विकारों से सजग रहना ।
कहां कब मन बिगड़ जाये, विकारों का भरोसा क्या ।।६।।

३६—तेरा ही आसरा है

सारे जहां के मालिक तेरा ही आसरा है ।
राजी हैं हम उसी में जिसमें तेरी रजा है ।।
तेरा ही आसरा है ।।

हम क्या बतायें तुझ को, सब कुछ तुम्हें खबर है,
हर हाल में हमारी तेरी तरफ नजर है ।
किस्मत है वो हमारी, जो तेरा फैसला है ।।
तेरा ही आसरा है ।।

हाथों को हम दुआ की खातिर में लायें कैसे ?
सजदे में तेरे आकर सिर को झुकायें कैसे ?
मजबूरियां हमारी, सब तू ही जानता है ।।
तेरा ही आसरा है ।।

रो कर कटे या हंस कर कटती जिन्दगानी,
तू गम दे या खुशी दे सब तेरी मेहरबानी ।
तेरी खुशी समझकर, सब गम भुला दिया है ।।
तेरा ही आसरा है ।।

दुनिया बनाके मालिक जाने कहां छिपा है,
आता नहीं नजर तू बस एक ही गिला है ।
भेजा है इस जहां में जो तेरा शुक्रिया है ।।

३७–भगवान् हमें सद्बुद्धि दो

हम तेरे उपासक माँग रहे, भगवान् हमें सद्बुद्धि दो ।
हे सविता ! मेधा प्रज्ञा दो, भगवान् हमें सद्बुद्धि दो ॥

बुद्धि-बल से ही मानव का, कल्याण यथावत् संभव है ।
गायत्री-मन्त्र से माँगा है, भगवान् हमें सद्बुद्धि दो ॥
हम तेरे उपासक माँग रहे ॥१॥

हे देव ! उपास्य-उपासक के, सब पाप-दुरित-दुःख दूर करो।
हम भद्र कहें और भद्र सुनें, भगवान् हमें सद्बुद्धि दो ॥
हम तेरे उपासक माँग रहे ॥२॥

सद्ज्ञान विवेक समृद्धि दो, तन-मन और धन की शुद्धि दो।
सब ऋद्धि-वृद्धि-सिद्धि दो, भगवान् हमें सद्बुद्धि दो ॥
हम तेरे उपासक माँग रहे ॥३॥

हम भौतिक भोग न माँग रहे, जितने भी मिले पर्याप्त हैं ये ।
तम अन्तःकरण का हरण करें, भगवान् हमें सद्बुद्धि दो ॥
हम तेरे उपासक माँग रहे ॥४॥

जीवन क्या है मृत्यु क्या है, क्यों आये मानव-जीवन में ।
सब गूढ़ रहस्यों को समझें, भगवान् हमें सद्बुद्धि दो ॥
हम तेरे उपासक माँग रहे ॥५॥

इस पावन बेला में मिलकर, हम यही प्रार्थना सदा करें ।
भवसागर पार उतरने को, भगवान् हमें सद्बुद्धि दो ॥
हम तेरे उपासक माँग रहे ॥६॥

३८—भारत का कर गया बेड़ा पार

भारत का कर गया बेड़ा पार, वो मस्ताना योगी ।
सोतों को कर गया फिर बेदार, वो मस्ताना योगी ।।
ईंट और पत्थर खाए, गोली से न घबराए ।
घातक से कर गया सच्चा प्यार, वो मस्ताना योगी ।।
ईश्वर का नाम नहीं था, सेवा का काम नहीं था ।
बहा गया शुद्ध प्रेम की धार, वो मस्ताना योगी ।।
भूले थे वेद की वाणी, करते थे सब मनमानी ।
वेदों का कर गया फिर प्रचार, वो मस्ताना योगी ।।
विधवा उद्धार करके, शुद्धि का मार्ग दिखा के ।
दलितों का कर गया फिर उद्धार, वो मस्ताना योगी ।।

३९—मंगल गीत

सदा फूलता-फलता भगवन्, ये याजक परिवार रहे ।
रहे प्यार जो किसी से इनका सदा आप से प्यार रहे ।।
मिथ्या कर अभिमान कभी न जीवन का अपमान करे ।
देवजनों की सेवा करके, वेदामृत का पान करे ।।
प्रभु आपकी आज्ञा पालन करता हर नर-नारी रहे ।।१।।
मिले सम्पदा जो भी इनको, उसको मानें आपकी ।
घड़ी न आने पाये इन पर कोई भी सन्ताप की ।।
यही कामना प्रभु आप से कर हम बारम्बार रहे ।।२।।
दुनियादारी रहे चमकती, धर्म निभाने वाले हों ।
सेवा के सांचे में सब ने जीवन अपने ढाले हों ।।
बच्चा-बच्चा परिवार का बनकर श्रवण कुमार रहे ।।३।।
बने रहें संतोषी सारे जीवन के हर काल में ।
हाल चाल हो ऐसा इनका रहें मस्त हर हाल में ।।
ताकि देश बसाया इनका सुखदायी संसार रहे ।।४।।

(अथ स्वस्तिवाचनम्)

ओ३म् अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्। होतारं रत्नधातमम् ॥१॥

स नः पितेव सूनवेऽग्ने सूपायनो भव । सचस्वा नः स्वस्तये ॥२॥ (ऋ० १।१।१,९)

स्वस्ति नो मिमीतामश्विना भगः स्वस्ति देव्यदितिरनर्वणः । स्वस्ति पूषा असुरो दधातु नः स्वस्ति द्यावापृथिवी सुचेतुना ॥३॥ —ऋ० ५।५१।

स्वस्तये वायुमुप ब्रवामहै सोमं स्वस्ति भुवनस्य यस्पतिः। बृहस्पतिं सर्वगणं स्वस्तये स्वस्तय आदित्यासो भवन्तु नः ॥४॥ —ऋ० ५।५१।१२

विश्वे देवा नो अद्या स्वस्तये वैश्वानरो वसुरग्निः स्वस्तये। देवा अवन्त्वृभवः स्वस्तये स्वस्ति नो रुद्रः पात्वंहसः॥५॥ —ऋ० ५।५१।१३

स्वस्ति मित्रावरुणा स्वस्ति पथ्ये रेवति । स्वस्ति न इन्द्रश्चाग्निश्च स्वस्ति नो अदिते कृधि ॥६॥ —ऋ० ५।५१।१४

स्वस्ति पन्थामनु चरेम सूर्याचन्द्रमसाविव । पुनर्ददताघ्नता जानता सं गमेमहि ॥७॥

(ऋ० ५।५१।११-१५)

ये देवानां यज्ञियां यज्ञियानां मनोर्यजत्रा अमृतां ऋतज्ञाः । ते नो रासन्तामुरुगायमद्य यूयं पात स्वस्तिभिः सदां नः ॥८॥ (ऋ० ७/३५/१५)

येभ्यो माता मधुमत्पिन्वते पयः पीयूषं द्यौरदितिरद्रिबर्हाः । उक्थशुष्मान् वृषभरान्त्स्वप्नसस्ताँ आदित्याँ अनु मदा स्वस्तये ॥९॥

नृचक्षसो अनिमिषन्तो अर्हणा बृहद् देवासो अमृतत्वमानशुः। ज्योतीरथा अहिमाया अनागसो दिवो वर्ष्माणं वसते स्वस्तये ॥१०॥

सम्राजो ये सुवृधो यज्ञमाययुरपरिह्वृता दधिरे दिवि क्षयम् । ताँ आ विवास नमसा सुवृक्तिभिर्महो आदित्याँ अदितिं स्वस्तये ॥११॥

को वः स्तोमं राधति यं जुजोषथ विश्वे देवासो मनुषो यतिष्ठन । को वोऽध्वरं तुविजाता अरं करद्यो नः पर्षदत्यंहः स्वस्तये ॥१२॥

येभ्यो होत्रां प्रथमामायेजे मनुः समिद्धाग्निर्मनसा सप्त होतृभिः । त आदित्या अभयं शर्म यच्छत सुगा नः कर्त सुपथा स्वस्तये ॥१३॥

य ईशिरे भुवनस्य प्रचेतसो विश्वस्य स्थातु-र्जगतश्च मन्तवः । ते नः कृतादकृतादेनसस्पर्यद्या देवासः पिपृता स्वस्तये ॥१४॥

भरेष्विन्द्रं सुहवं हवामहेऽहोमुचं सुकृतं दैव्यं जनम्। अग्निं मित्रं वरुणं सातये भगं द्यावापृथिवी मरुतः स्वस्तये ॥१५॥

सुत्रामाणं पृथिवीं द्यामनेहसं सुशर्माणमदितिं सुप्रणीतिम् । दैवीं नावं स्वरित्रामनागसमस्त्रवन्तीमा रुहेमा स्वस्तये ॥१६॥

विश्वे यजत्रा अधि वोचतोतये त्रायध्वं नो दुरेवाया अभिहुतः । सत्यया वो देवहूत्या हुवेम शृण्वतो देवा अवसे स्वस्तये ॥१७॥

अपामीवामप विश्वामनाहुतिमपारातिं दुर्विदत्रा-मघायतः । आरे देवा द्वेषो अस्मद्युयोतनोरु णः शर्म यच्छता स्वस्तये ॥१८॥

अरिष्टः स मर्त्तो विश्व एधते प्र प्रजाभिर्जायते धर्मणस्परि । यमादित्यासो नयथा सुनीतिभिरति विश्वानि दुरिता स्वस्तये ॥१९॥

यं देवासोऽवथ वाजसातौ यं शूरसाता मरुतो हिते धने । प्रातर्यावाणं रथमिन्द्र सानसिमरिष्यन्तमा रुहेमा स्वस्तये ॥२०॥

स्वस्ति नः पथ्यासु धन्वसु स्वस्त्य१प्सु वृजने स्ववति । स्वस्ति नः पुत्रकृथेषु योनिषु स्वस्ति राये मरुतो दधातन ॥२१॥

स्वस्तिरिद्धि प्रपथे श्रेष्ठा रेक्णस्वत्यभि या वाममेति । सा नो अमा सो अरणे नि पातु स्वावेशा भवतु देवगोपा ॥२२॥ (ऋ० १०/६३/३-१६)

इषे त्वोर्जे त्वा वायव स्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मणऽआप्यायध्वमघ्न्याऽइन्द्राय भागं प्रजावतीरनमीवाऽअयक्ष्मा मा व स्तेनऽईशत माघशंसो ध्रुवाऽअस्मिन् गोपतौ स्यात बह्वीर्यजमानस्य पशून् पाहि ॥ २३॥ (यजु० १/१)

आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतोऽदब्धासोऽअपरीतास उद्भिदः । देवा नो यथा सदमिद् वृधेऽअसन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवेदिवे ॥२४॥

देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयतां देवानाꣳ रातिरभि नो निवर्तताम् । देवानाꣳ सख्यमुपसेदिमा वयं देवा नऽआयुः प्रतिरन्तु जीवसे ॥२५॥ (यजु० २५/१४-१५)

तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियञ्जिन्वमवसे हूमहे वयम् । पूषा नो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये ॥२६॥ (यजु:० २५।१८)

स्वस्ति नऽ इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्तार्क्ष्योऽअरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ॥२७॥ (यजु० २५।१९)

भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः। स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाꣳसस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः ॥२८॥ (यजु० २५।२१)

अग्न आ याहि वीतये गृणानो हव्यदातये । नि होता सत्सि बर्हिषि ॥२९॥

त्वमग्ने यज्ञानां होता विश्वेषां हितः । देवेभिर्मानुषे जने ॥३०॥ (सा० पू० १।१।१-२)

ये त्रिषप्ताः परियन्ति विश्वा रूपाणि बिभ्रतः । वाचस्पतिर्बला तेषां तन्वो अद्य दधातु मे ॥३१॥ (अथर्व० १।१।१)

॥ इति स्वस्तिवाचनम् ॥

(अथ शान्तिकरणम्)

शं न इन्द्राग्नी भवतामवोभिः शं न इन्द्रावरुणा रातहव्या। शमिन्द्रासोमा सुविताय शं योः शं न इन्द्रापूषणा वाजसातौ ॥१॥

शं नो भगः शमु नः शंसो अस्तु शं नः पुरन्धिः शमु सन्तु रायः। शं नः सत्यस्य सुयमस्य शंसः शं नो अर्यमा पुरुजातो अस्तु ॥२॥

शं नो धाता शमु धर्त्ता नो अस्तु शं न उरूची भवतु स्वधाभिः। शं रोदसी बृहती शं नो अद्रिः शं नो देवानां सुहवानि सन्तु ॥३॥

शं नो अग्निर्ज्योतिरनीको अस्तु शं नो मित्रावरुणा-वश्विना शम्। शं नः सुकृतां सुकृतानि सन्तु शं न इषिरो अभि वातु वातः ॥४॥

शं नो द्यावापृथिवी पूर्वहूतौ शमन्तरिक्षं दृशये नो अस्तु । शं न ओषधीर्वनिनो भवन्तु शं नो रजसस्पतिरस्तु जिष्णुः ॥५॥

शं न इन्द्रो वसुभिर्देवो अस्तु शमादित्येभिर्वरुणः सुशंसः। शं नो रुद्रो रुद्रेभिर्जलाषः शं नस्त्वष्टा ग्नाभिरिह शृणोतु ॥६॥

शं नः सोमो भवतु ब्रह्म शं नः शं नो ग्रावाणः शमु सन्तु यज्ञाः । शं नः स्वरूणां मितयो भवन्तु शं नः प्रस्व१ः शम्वस्तु वेदिः ॥७॥

शं नः सूर्य उरुचक्षा उदेतु शं नश्चतस्त्रः प्रदिशो भवन्तु । शं नः पर्वता ध्रुवयो भवन्तु शं नः सिन्धवः शमु सन्त्वापः ॥८॥

शं नो अदितिर्भवतु व्रतेभिः शं नो भवन्तु मरुतः स्वर्काः। शं नो विष्णुः शमु पूषा नो अस्तु शं नो भवित्रं शम्वस्तु वायुः ॥९॥

शं नो देवः सविता त्रायमाणः शं नो भवन्तूषसो विभातीः। शं नः पर्जन्यो भवतु प्रजाभ्यः शं नः क्षेत्रस्य पतिरस्तु शम्भुः ॥१०॥

शं नो देवा विश्वदेवा भवन्तु शं सरस्वती सह धीभिरस्तु । शमभिषाचः शमु रातिषाचः शं नो दिव्याः पार्थिवाः शं नो अप्याः ॥११॥

शं नः सत्यस्य पतयो भवन्तु शं नो अर्वन्तः शमु सन्तु गावः। शं न ऋभवः सुकृतः सुहस्ताः शं नो भवन्तु पितरो हवेषु ॥१२॥

शं नो अज एकपाद् देवो अस्तु शं नोऽहिर्बुध्न्यः१ँ शं समुद्रः । शं नो अपां नपात्पेरुरस्तु शं नः पृश्निर्भवतु देवगोपा ॥१३॥ (ऋ० ७/३५/१-१३)

इन्द्रो विश्वस्य राजति । शन्नोऽअस्तु द्विपदे शं चतुष्पदे ॥१४॥

शन्नो वातः पवताᳬं शन्नस्तपतु सूर्य्यः । शन्नः कनिक्रदद्देवः पर्जन्योऽअभि वर्षतु ॥१५॥

अहानि शम्भवन्तु नः शᳬं रात्रीः प्रति धीयताम् । शन्न इन्द्राग्नी भवतामवोभिः शन्नऽइन्द्रावरुणा रातहव्या। शन्न इन्द्रापूषणा वाजसातौ शमिन्द्रासोमा सुविताय शं योः ॥१६॥

शन्नो देवीरभिष्टयऽआपो भवन्तु पीतये । शं योरभिस्रवन्तु नः ॥१७॥

द्यौः शान्तिरन्तरिक्षᳬं शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः । वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वᳬं शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि ॥१८॥

तच्चक्षुर्देवहितम्पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत् । पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतꣳ शृणुयाम शरदः शतम्प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतम्भूयश्च शरदः शतात् ॥१९॥ (यजुः० ३६।८,१०-१२,१७,२४)

यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं तदु सुप्तस्य तथैवैति । दूरङ्गमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥२०॥

येन कर्माण्यपसो मनीषिणो यज्ञे कृण्वन्ति विदथेषु धीराः । यदपूर्वं यक्षमन्तः प्रजानां तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥२१॥

यत्प्रज्ञानमुत चेतो धृतिश्च यज्ज्योतिरन्तरमृतं प्रजासु । यस्मान्न ऋते किञ्चन कर्म क्रियते तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥२२॥

येनेदम्भूतं भुवनम्भविष्यत् परिगृहीतममृतेन सर्वम्। येन यज्ञस्तायते सप्तहोता तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥२३॥

यस्मिन्नृचः साम यजूꣳषि यस्मिन्प्रतिष्ठिता रथनाभाविवाराः । यस्मिँश्चित्तꣳ सर्वमोतं प्रजानां तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥२४॥

सुषारथिरश्वानिव यन्मनुष्यान्नेनीयतेऽभीशुभि-
र्वाजिन इव । हृत्प्रतिष्ठं यदजिरं जविष्ठं तन्मे मनः
शिवसंङ्कल्पमस्तु ॥२५॥ (यजुः० ३४।१-६)

स नः पवस्व शं गवे शं जनाय शमर्वते । शं
राजन्नोषधीभ्यः ॥२६॥ (सा० उ० १।१।३)

अभयं नः करत्यन्तरिक्षमभयं द्यावापृथिवी उभे
इमे । अभयं पश्चादभयं पुरस्तादुत्तरादधरादभयं नो
अस्तु ॥२७॥

अभयं मित्रादभयममित्रादभयं ज्ञातादभयं परोक्षात्।
अभयं नक्तमभयं दिवा नः सर्वा आशा मम मित्रं
भवन्तु ॥२८॥ (अथर्व० १९।१५।५-६)

॥ इति शान्तिकरणम् ॥

जन्मदिवस

जन्मदिवस के उपलक्ष्य में निम्नलिखित मन्त्रों से विशेष आहुतियाँ दें–

ओं देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयतां देवानां रातिरभि नो निवर्त्तताम् । देवानां सख्यमुपसेदिमा वयं देवा न आयुः प्रतिरन्तु जीवसे स्वाहा ॥

अर्थ : ऋजुयतां सरलता को चाहनेवाले **देवानां** विद्वानों की भद्रा कल्याण करने वाली **सु–मतिः** अच्छी बुद्धि (और उनकी) **रातिः** दान–वृत्ति **नः** हमारी **अभ** ओर **नि–वर्त्ततां** भले प्रकार वर्तमान हो । **वयं** हम **देवानां** विद्वानों के साथ **सख्यं** मित्रता को **उप–सेदिम** प्राप्त हों । **देवाः** वे विद्वान् **नः** हमारी **आयुः** आयु को **जीवसे** जीने के लिए **प्र–तिरन्तु** बढ़ावें ।

ओं तच्चक्षुर्देव हितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत् । पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतं शृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात् स्वाहा ।

अर्थ : उस सब के द्रष्टा, धार्मिक विद्वानों के परमहितकारक, सृष्टि से पूर्व, पश्चात् और मध्य में सत्यस्वरूप से विद्यमान रहनेवाले और सर्व जगदुत्पादक ब्रह्म को सौ वर्ष तक देखें। उसके सहारे से सौ वर्ष तक जीयें । सौ वर्ष तक उसका ही गुणगान सुनें । उसी ब्रह्म का सौ वर्ष तक उपदेश करें। उसी की कृपा से सौ वर्ष तक किसी के अधीन न रहें। उसी ईश्वर की आज्ञापालन और कृपा से सौ वर्ष के उपरान्त भी हम लोग देखें, जीवें, सुनें, सुनावें और स्वतन्त्र रहें ।

ओ३म् उप प्रियं पनिप्नतं युवानमाहुतीवृधम् ।
अगन्म बिभ्रतो नमो दीर्घमायुः कृणोतु मे ॥

(अथर्व० ७।३२।१)

अर्थ : हे प्रिय स्तुति-योग्य ईश्वर ! मेरी दीर्घ आयु करो । आज जैसे मैं आहुति द्वारा इस यज्ञ की अग्नि को बढ़ा रहा हूं, वैसे ही मैं सात्विक अन्न भक्षण करके यौवन को प्राप्त करूं और अपने जन्मदिन प्रतिवर्ष मनाता रहूं ।

ओ३म् इन्द्र जीव सूर्य जीव देवा जीवा जीव्यासमहम्। सर्वमायुर्जीव्यासम् ॥ *(अथर्व० १९।७०।१)*

अर्थ : हे ऐश्वर्यवान् परमेश्वर ! तू हमें जीवन धारण करा। हे सूर्य ! हे देवगण ! मैं दीर्घ जीवन तक जीता रहूं ।

ओ३म् आयुषायुःष्कृतां जीवायुष्मान् जीव मा मृथाः। प्राणेनात्मन्वतां जीव मा मृत्योरुदगा वशम् ॥

(अथर्व० १९।२७।८)

अर्थ : (अपने जन्म-दिवस मनाते हुए मन में दृढ़ संकल्प करो कि) मैं शीघ्र ही मृत्यु के वश में नहीं आना है। पुरुषार्थी तथा आत्मिक बलधारी, अध्यात्मनिष्ठ, सत्पुरुषों के समान अपनी आयु को पुरुषार्थ द्वारा दीर्घ करता हुआ अपनी पूर्ण आयु की समाप्ति पर्यन्त सत्कर्म करता हुआ मैं आनन्द से रहूंगा और प्रशस्त यश को प्राप्त करूंगा ।

ओ३म् शतं जीव शरदो वर्धमानः शतं हेमन्ताञ्छतमु वसन्तान् । शतमिन्द्राग्नी सविता बृहस्पतिः शतायुषा हविषेमं पुनर्दुः ॥ *(ऋ० १०।१६१।४)*

अर्थ : प्रत्येक मनुष्य को निरोग रहकर सौ वर्ष, सौ हेमन्त और सौ वसन्त ऋतुओं तक जीने का प्रयत्न करना चाहिए । इन्द्र-विद्युत्-चिकित्सा-अग्नि-चिकित्सा, सूर्यकिरण-

चिकित्सा, बृहस्पति-मानस चिकित्सा तथा हवन-चिकित्सा, इनका योग्य रीति से सेवन करने पर अवश्य दीर्घायु प्राप्त होती है । हे वीर ! तू शतायु बन ।

ओ३म् सत्यामाशिषं कृणुता वयोधै कीरिं चिद्ध्यवथ स्वेभिरेवैः । पश्चा मृधो अप भवन्तु विश्वास्तद् रोदसी श्रृणुतं विश्वमिन्वे ॥ *(अथर्व० २०।९१।११)*

अर्थ : हे विद्वानो ! आप लोग दीर्घायु के धारण करने के निमित्त सत्य और यथार्थ आशीर्वाद प्रदान करो । आप लोग अपने ज्ञानों द्वारा अपने स्तुति-कर्त्ता भक्त व प्रेमी प्रियजन की सदा रक्षा करते हो । सब दुःख और विपत्तियां दूर हों । हे देवियों तथा भद्र पुरुषों ! आप मुझे वेदवचनों द्वारा शुभ शिक्षा दो ।

ओ३म् जीवा स्थ जीव्यासं सर्वमायुर्जीव्यासम् ।
उपजीवा स्थोप जीव्यासं सर्वमायुर्जीव्यासम् ।
सं जीवास्थ सं जीव्यासं सर्वमायुर्जीव्यासम् ।
जीवला स्थ जीव्यासं सर्वमायुर्जीव्यासम् ।

(अथर्व० १९।६९।१-४)

अर्थ : हे जलों के समान शान्त आप्तजनों ! आप मुझे ऐसा आशीर्वाद दें जिससे मैं दीर्घ जीवन को प्राप्त करूं । मैं अपने जीवन को और भी अधिक बढ़ाने में समर्थ होऊं । मैं उत्तम रीति से जीवन धारण करूं । आप भली प्रकार जीवनप्रद हो, अतः मुझे भी तुम जीवन-तत्व प्रदान कराओ । मैं पुरुषार्थ, श्रेष्ठों के आश्रय (सहाय) एवं प्रेरणा से दीर्घ जीवन को प्राप्त करूं । सब पुष्प वर्षा करके आशीर्वाद दें :-

हे·····! त्वं जीव शरदः शतं वर्द्धमानः ।
आयुष्मान् वर्चस्वी तेजस्वी श्रीमान् भूयाः ।

अर्थ : हे····! तुम आयुष्मान, विद्यावान्, धर्मात्मा, यशस्वी, पुरुषार्थी, प्रतापी, परोपकारी, श्रीमान् बनो ।

व्यापार सम्बन्धी मन्त्र

जिस दिन कोई व्यापार-दुकानादि खोलनी हो अथवा व्यापार को बढ़ाना हो या संस्थान प्रारम्भ करना हो, उस दिन प्रसन्नचित्त होकर निश्चित किये गये स्थान पर यज्ञवेदि में यजमान को पूर्वाभिमुख बैठावें। आचमन से सामान्य यज्ञ की सब क्रिया करके पूर्णाहुति से पूर्व निम्नलिखित मन्त्रों का उच्चारण कराकर आहुति दिलावें। इनका अर्थ भी सुनाते जावें।

ओ३म् इन्द्रमहं वणिजं चोदयामि स न ऐतु पुर एता नो अस्तु । नुदन्नरातिं परिपन्थिनं मृगं स ईशानो धनदा अस्तु मह्यम् ॥ *(अथर्व० ३।१५।१।।)*

अर्थ : मैं व्यापार-व्यवसाय की वृद्धि चाहनेवाला सबसे बड़े ऐश्वर्यशाली परमात्मा की प्रार्थना करता हूं कि वह हमारे इस व्यापार सम्बन्धी व्यवसाय का अगुआ बने । वह परमेश्वर हमारे व्यापार के मार्ग में बाधा डालनेवालों को हमसे दूर करे तथा हमारे लिये धन देनेवाला हो ।

ओ३म् ये पन्थानो बहवो देवयाना अन्तरा द्यावापृथिवी संचरन्ति। ते मा जुषन्तां पयसा घृतेन यथा क्रीत्वा धनमाहराणि ॥ *(अथर्व० ३।१५।२।।)*

अर्थ : जल-थल-आकाश के बहुत-से मार्गों के यातायात-साधन हमारे अनुकूल हों । मैं दूरस्थ स्थानों से बहुत-से पदार्थ क्रय करके बहुत-सा धन प्राप्त करूँ।

ओ३म् इध्मेनाग्न इच्छमानो घृतेन जुहोमि हव्यं तरसे बलाय। यावदीशे ब्रह्मणा वन्दमान इमां धियं शतसेयाय देवीम् ॥ *(अथर्व० ३।१५।३।।)*

अर्थ : हे ज्ञानस्वरूप परमात्मन् ! मैं लाभ की इच्छा

करनेवाला समिधा-घृत-सामग्री से बल-बुद्धि-दृढ़ता की प्राप्ति करके अनेक व्यापारिक सिद्धियाँ प्राप्त करूँ।

ओं येन धनेन प्रपणं चरामि धनेन देवा धन-मिच्छमानः। तन्मे भूयो भवतु मा कनीयोऽग्ने सातघ्नो देवान् हविषा नि षेध ॥ *(अथर्व० ३।१५।५।।)*

अर्थ : मैं मूलधन से व्यापार करके बहुत लाभ प्राप्त करना चाहता हूं । जिस धन से व्यापार करूँ वह धन बहुत बढ़ जाये, कम न हो । हे जगदीश ! इस व्यापार के मार्ग में आनेवाली रुकावटें दूर करो ।

ओं येन धनेन प्रपणं चरामि धनेन देवा धन-मिच्छमानः। तस्मिन् म इन्द्रो रुचिमा दधातु प्रजापतिः सविता सोमो अग्निः॥ *(अथर्व० ३।१५।६।।)*

अर्थ : मैं अपने इस मूल धन से व्यापार करता हुआ इसे और अधिक बढ़ाना चाहता हूं । प्रभु देव मेरे उत्साह को बढ़ावें ताकि मैं दिन-प्रतिदिन सर्वोत्पादक जगदीश की उपासना करता रहूं, वही मेरा एकमात्र प्रेरक है ।

ओ३म् प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परिता बभूव । यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम् ॥ *(ऋ० १०।१२१।१०।।)*

अर्थ : हे सब प्रजा के स्वामी परमात्मन् ! आपसे भिन्न दूसरा कोई उन इन सब उत्पन्न हुए जड़-चेतनादिकों को नहीं तिरस्कार करता है, अर्थात् आप सर्वोपरि हैं जिस-जिस पदार्थ की कामना वाले होके, हम लोग भक्ति करें आपका आश्रय लेवें और वांछा करें उस-उस की कामना हमारी सिद्ध होवे, जिससे हम लोग धनैश्वर्यों के स्वामी होवें ।

तत्पश्चात् गायत्री मन्त्र का श्रद्धा से उच्चारण करके तीन

आहुति दिलावें, पूर्णाहुति के पश्चात् भजन–गीत–प्रार्थना और फिर इन मन्त्रों से पुष्पवर्षा करके यजमान को आशीर्वाद देवें–

ओं सत्याः सन्तु यजमानस्य कामाः।
ओं शुभाः सन्तु यजमानस्य कामाः।
ओं सुफलाः सन्तु यजमानस्य कामाः।
ओं स्वस्ति । ओं स्वस्ति । ओं स्वस्ति ॥

विवाह दिवस

जन्मदिन की भाँति विवाह की वर्षगाँठ मनाना बड़ा महत्त्वपूर्ण एवं आवश्यक है । विवाह–संस्कार के समय एक–दूसरे को दिये गये आश्वासनों एवं प्रतिज्ञाओं को स्मरण करने तथा एक–दूसरे के अनुकूल बनने–बनाने, मित्र तथा सखा बनने–बनाने का बहुत ही सुन्दर अवसर है ।

इन दिन पति–पत्नी स्नानादि के पश्चात् सुन्दर वस्त्र धारण करके यज्ञवेदि में पूर्वाभिमुख बैठें । आचमन, अङ्गस्पर्श तथा नया यज्ञोपवीत धारण करके बड़ी श्रद्धापूर्वक ईश्वरस्तुति–प्रार्थनोपासना का अर्थसहित उच्चारण करें । स्वस्ति–वाचन, शान्ति–करण के पाठ के बाद अग्न्याधान वा हवन की विशेष विधि करके पूर्णाहुति से पूर्व इन मन्त्रों का दोनों उच्चारण करके आहुति दें, अर्थ भी सुनें–

ओ३म् समञ्जन्तु विश्वे देवाः समापो हृदयानि नौ । सं मातरिश्वा सं धाता समुदेष्ट्री दधातु नौ ॥

ऋ० १०।८५।४६।।

अर्थ : हम दोनों (पति–पत्नी) निश्चयपूर्वक तथा प्रसन्नतापूर्वक घोषणा करते हैं कि हम दोनों के हृदय जल के समान सदा शान्त और मिले हुए रहेंगे । जैसे प्राणवायु हमको प्रिय है वैसे हम दोनों एक–दूसरे से सदा प्रसन्न रहेंगे । जैसे

धारण करनेहारा परमात्मा सबमें मिला हुआ सब जगत् को धारण करता है, वैसे हम दोनों एक-दूसरे को धारण करते रहेंगे। जैसे उपदेश करनेहारा श्रोताओं से प्रीति करता है, वैसे हम दोनों का आत्मा एक-दूसरे के साथ दृढ़ प्रेम को धारण करे, प्रभु ऐसी कृपा करें ।

ओ३म् मम व्रते ते हृदयं दधामि मम चित्तमनुचित्तं ते अस्तु । मम वाचमेकमना जुषस्व प्रजापतिष्ट्वा नियुनक्तु मह्यम् ॥ पार० १।८।८॥

अर्थ : तुम्हारे हृदय, आत्मा और अन्तःकरण को धारण करते हुए अपने चित्त के अनुकूल सदा रखते हुए मैं तुम्हारे हृदय, आत्मा और अन्तःकरण को धारण करता हूं करती हूं । मेरे चित्त के अनुकूल तुम्हारा चित्त सदा बना रहे । मेरी वाणी को तुम एकाग्रचित्त होकर सदा सेवन किया करो । अर्थात् हम दोनों (पति-पत्नी) पूर्व की हुई प्रतिज्ञा के अनुकूल सदा वर्त्ता करें जिससे हम सदा आनन्दित और कीर्तिमान्, पतिव्रता और पत्नीव्रत होके सब प्रकार के व्यभि-चार, अप्रिय भाषणादि को छोड़ करके परस्पर प्रीतियुक्त सदा बने रहें ।

ओ३म् अन्नापाशेन मणिना प्राणसूत्रेण पृश्निना । बध्नामि सत्यग्रन्थिना मनश्च हृदयं च ते ॥ ब्रा० १।३।८॥

अर्थ : जैसे अन्न के साथ प्राण, प्राण के साथ अन्न तथा अन्न और प्राण का अन्तरिक्ष के साथ सम्बन्ध है, वैसे तेरे हृदय, मन और चित्त आदि को सत्यता की गाँठ से बांधता वा बांधती हूं अर्थात् पति-पत्नी दोनों का प्रेम-बन्धन एक-दूसरे के अनुकूल सदा दृढ़ बना रहे ।

ओ३म् यदेतद् हृदयं तव तदस्तु हृदयं मम । यदिदछं हृदयं मम तदस्तु हृदयं तव ॥ ब्रा० १।३।९॥

अर्थ : जो यह तुम्हारा आत्मा वा अन्त:करण है वह मेरा आत्मा व अन्त:करण के तुल्य सदा प्रिय हो और मेरा जो यह आत्मा, प्राण और मन है सो तुम्हारे आत्मा के तुल्य प्रिय सदा रहे अर्थात् पति-पत्नी के हृदय एक-दूसरे के सदा प्रिय बने रहें ।

ओ३म् तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत् । पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतꣳ शृणुयाम शरदः शतं प्र ब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात्।। यजु० ३६।२४।।

अर्थ : उस सब के द्रष्टा, धार्मिक विद्वानों के परमहितकारक, सृष्टि से पूर्व, पश्चात् और मध्य में सत्यस्वरूप से विद्यमान रहनेवाले और सर्व जगदुत्पादक ब्रह्म को सौ वर्ष तक देखें। उसके सहारे से सौ वर्ष तक जीयें । सौ वर्ष तक उसका ही गुणगान सुनें । उसी ब्रह्म का सौ वर्ष तक उपदेश करें। उसी की कृपा से सौ वर्ष तक किसी के अधीन न रहें। उसी ईश्वर की आज्ञापालन और कृपा से सौ वर्ष के उपरान्त भी हम लोग देखें, जीवें, सुनें, सुनावें और स्वतन्त्र रहें ।

तत्पश्चात् गायत्री मन्त्र से श्रद्धापूर्वक तीन आहुति दिलायें ।

—पूर्णाहुति के बाद भजन-गीत-प्रार्थना और तत्पश्चात् इन मन्त्रों से तीन बार पुष्पवर्षा करके पति-पत्नी को आशीर्वाद देवें—

आशीर्वचन

ओं सौभाग्यमस्तु । ओं शुभं भवतु ॥
ओं सौभाग्यमस्तु । ओं शुभं भवतु ॥
ओं स्वस्ति । ओं स्वस्ति । ओं स्वस्ति ॥

शिलान्यास के मन्त्र

नवीन शाला-भवन, यज्ञशाला अथवा मकान आदि के निर्माण-कार्य के शुभारम्भ या नींव रखने अथवा शिलान्यास के शुभावसर पर अपने सहयोगियों, कार्यकर्त्ताओं, इष्ट मित्रों, सम्बन्धियों-सहित यज्ञ-वेदी में उपस्थित होकर आचमन-अङ्गस्पर्श करके ईश्वरस्तुति- प्रार्थनोपासना के मन्त्रों का अर्थसहित, श्रद्धापूर्वक पाठ और स्वस्तिवाचन, शान्तिकरण के उच्चारण और अग्न्याधान करके विशेष यज्ञ की विधि द्वारा पूर्णाहुति से पूर्व निम्नलिखित मन्त्रों से विशेष आहुति दिलावें और अर्थ भी सुनाते जावें ।

ओं विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद् भद्रन्तन्न आ सुव ।। यजु० ३०।३।।

अर्थ–हे सकल जगत् के उत्पत्तिकर्ता, समग्र ऐश्वर्ययुक्त शुद्ध स्वरूप, सब सुखों के दाता परमेश्वर आप कृपा करके हमारे सम्पूर्ण दुर्गुण-दुर्व्यसन और दुःखों को दूर कर दीजिये। और जो कल्याणकारक गुण-कर्म-स्वभाव और पदार्थ हैं वह सब हमको प्राप्त कीजिये ।

ओं प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परिता बभूव। यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम्।। ऋ० १०।१२१।१०

अर्थ–हे सब प्रजा के स्वामी परमात्मा आपसे भिन्न दूसरा कोई उन इन सब उत्पन्न हुए जड़-चेतनादिकों को नहीं तिरस्कार करता है, अर्थात् आप सर्वोपरि हैं । जिस-जिस पदार्थ की कामनावाले हम लोग भक्ति करें आपका आश्रय लेवें और वाञ्छा करें, उस-उस की कामना हमारी सिद्ध होवे, जिससे हम लोग धनैश्वर्यों के स्वामी होवें ।

ओं भूर्भुवः स्वः । तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात् ॥ यजुः० ३६।३।।

अर्थ—हे प्राण-स्वरूप, दुःख-विनाशक, आनन्द-प्रदाता सविता देव ! आप हमें अपना दिव्य-विज्ञान रूपी प्रकाश तथा सद्बुद्धि का उत्तम दान देकर, हम पर कृपा करें । जिससे हम सदैव पवित्र बुद्धि से प्रेरित होकर, श्रेष्ठ कार्यों को करते रहें।

ओ३म् ऊर्जस्वती पयस्वती पृथिव्यां निमिता मिता । विश्वान्नं बिभ्रती शाले मा हिंसीः प्रतिगृह्णतः॥

अथर्व० ९।३।१६

अर्थ : हे शाले ! तू आरोग्य, पराक्रम से युक्त एवं धन-धान्य से सम्पन्न दुग्ध, जल आदि से परिपूर्ण पृथिवी पर योजनानुसार माप-मापकर बनाई जा रही है । इस प्रकार के अन्नों को धारण करती हुई तू ग्रहण करनेहारों को सदा सुखदायी हो ।

ओं ब्रह्मणा शालां निमितां कविभिर्निमितां मिताम् । इन्द्राग्नी रक्षतां शालाममृतौ सोम्यं सदः॥

अथर्व० ९।३।१९

अर्थ : विद्वानों की सम्मति से ज्ञानपूर्वक बनाई जा रही और बुद्धिमान् शिल्पियों द्वारा मापी और दृढ़ बनाई जा रही शाला में वायु और अग्नि सदा सुखकारी हों ।

मा नः पाशं प्रति मुचो गुरुर्भारो लघुर्भव । वधूमिव त्वा शाले यत्रकामं भरामसि ॥

अथर्व० कां० ९ । अ० २। वर्ग ३ ॥

अर्थः—हे शिल्पि लोगो ! जैसे हमारी शाला अर्थात् गृह बन्धन को कभी न छोड़े, जिस में बड़ा भार छोटा होवे, वैसी बनाओ । उस शाला को जहां जैसी कामना हो वहां

वैसी हम लोग स्त्री के समान स्वीकार करते हैं, वैसे तुम भी ग्रहण करो ॥८॥

अब निम्नलिखित तीनों मन्त्रों के उच्चारण के साथ निश्चित स्थान पर तीन बार जल छिड़कें–

ओ३म् आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता नऽ ऊर्ज्जे दधातन । महे रणाय चक्षसे ॥ यजुः० ३६।१४॥

ओं यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः। उशतीरिव मातरः॥ यजुः० ३६।१५॥

ओं तस्मा अरंऽगमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ । आपो जनयथा च नः ॥ यजुः० ३।१६॥

तत्पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र को बोलकर शिलान्यास करावें अथवा नींव रखावें–

ओ३म् अग्न आ याहि वीतये गृणानो हव्यदातये । नि होता सत्सि बर्हिषि॥ साम० १।१।१॥

अर्थ : हे सर्व जगत् के निर्माण करनेवाले जगदीश्वर! आप कृपा करके हमारे यज्ञ में अर्थात् ज्ञान–यज्ञरूप ध्यान में आइये, पधारिये । इस यज्ञ में आप ही की स्तुति हो रही है। हमारे एक–मात्र पूज्य और इष्ट आप ही हैं। सब पदार्थों और सब शक्तियों के दाता परमेश्वर हमारे हृदय को सुप्रकाशित कीजिये जिससे शुद्ध–बुद्धि और शुभ–विचारों का उदय हो ताकि आपकी कृपा से हे ज्योतिस्वरूप ! हम सदैव यज्ञ–कर्मों का अनुष्ठान करनेवाले हों और सफलता प्राप्त करते रहें। हे स्वामिन्! आइये और हमारे हृदय में विराजिये ।

फिर यज्ञ–मण्डप में बैठकर गायत्री मन्त्र के उच्चस्वर सहित पाठ से तीन आहुतियाँ देकर सर्वं वै पूर्णꣳ स्वाहा का ३ बार उच्चारण करके पूर्णाहुति दिलावें ।

ईशभजन–प्रार्थना–मंगल के पश्चात्

ओं सत्या सन्तु यजमानस्य कामाः।

ओं स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु॥

ओं स्वस्ति । ओं स्वस्ति । ओं स्वस्ति ॥

के मन्त्रपाठ–सहित यजमानों पर पुष्पवर्षा करके आशीर्वाद दें ।

संक्षेपतः गृहप्रवेशविधिः

जब घर बन चुके, तब उसकी शुद्धि अच्छे प्रकार करा, सब प्रकार की सामग्री समिधा घृत चावल मिष्ट सुगन्ध पुष्टिकारक द्रव्यों को लेके शोधन कर प्रथम दिन रख लेवे । जिस दिन गृहपति का चित्त प्रसन्न होवे, उसी शुभ दिन में गृहप्रवेश करे ।

उस समय घर के जिस मुख्य द्वार से निकलना और प्रवेश करना होवे, अर्थात् जो मुख्य द्वार हो, उसी द्वार के समीप ब्रह्मा सहित बाहर ठहर कर–

ओम् अच्युताय भौमाय स्वाहा ॥

इससे एक आहुति देकर, ध्वजा का स्तम्भ जिसमें ध्वजा लगाई हो, खड़ा करे । और घर के ऊपर चारों कोणों पर ४ चार ध्वजा खड़ी करे । तथा कार्यकर्त्ता गृहपति स्तम्भ खड़ा करके उसके मूल में जल से सेचन करे, जिससे वह दृढ़ रहे ।

पुनः द्वार के सामने बाहर जाकर नीचे लिखे ४ चार मन्त्रों से जलसेचन करे–

ओम् इमामुच्छ्रयामि भुवनस्य नाभिं वसोर्द्धारां प्रतरणीं वसूनाम् । इहैव ध्रुवां निमिनोमि शालां क्षेमे तिष्ठतु घृतमुक्षयमाणा ॥१॥

इस मन्त्र से पूर्व द्वार के सामने जल छिटकावे ।

अश्वावती गोमती सूनृतावत्युच्छ्रयस्व महते सौभगाय । आ त्वा शिशुराक्रन्दत्वा गावो धेनवो वाश्य-माना:॥२॥

इस मन्त्र से दक्षिण द्वार ।

आ त्वा कुमारस्तरुण आ वत्सो जगदैः सह ।
आ त्वा परिस्त्रुतः कुम्भ आ दध्नः कलशैरुप । क्षेमस्य पत्नी बृहती सुवासा रयिं नो धेहि सुभगे सुवीर्यम् ॥३॥

इस मन्त्र से पश्चिम द्वार ।

अश्वावद् गोमदूर्जस्वत् पर्णं वनस्पतेरिव । अभि नः पूर्यताꣳ रयिरिदमनुश्रेयो वसानः ॥४॥

इस मन्त्र से उत्तर द्वार के सामने जल छिटकावे । तत्पश्चात् सब द्वारों पर पुष्प और पल्लव तथा कदली-स्तम्भ वा कदली के पत्ते भी द्वारों की शोभा के लिये लगाकर, पश्चात् गृहपति–

हे ब्रह्मन् ! प्रविशामीति ।

ऐसा वाक्य बोले । और ब्रह्मा–

वरं भवान् प्रविशतु ॥

ऐसा प्रत्युत्तर देवे । और ब्रह्मा की अनुमति से–

ओम् ऋचं प्रपद्ये शिवं प्रपद्ये ॥

इस वाक्य को बोलके भीतर प्रवेश करे। और जो घृत गरम कर छान सुगन्ध मिलाकर रक्खा हो, उसको पात्र में लेके **आचमन** करके **अग्न्याधान, समिदाधान, जल- प्रोक्षण आघारावाज्यभागाहुति** ४ चार, और **व्याहृति आहुति** ४ चार, नवमी **स्विष्टकृत्** विधि करके कुण्ड में–

ओं प्राच्या दिशः शालाया नमो महिम्ने स्वाहा। ओं देवेभ्यः स्वाह्येभ्यः स्वाहा ॥

इन [दो] मन्त्रों से पूर्व द्वारस्थ वेदी में दो घृताहुति देवे। वैसे ही–

ओं दक्षिणाया दिशः शालाया नमो महिम्ने स्वाहा । ओं देवेभ्यः स्वाह्येभ्यः स्वाहा ॥

इन दो मन्त्रों से दक्षिण द्वारस्थ वेदी में एक-एक मन्त्र करके दो आज्याहुति । और–

ओं प्रतीच्या दिशः शालाया नमो महिम्ने स्वाहा । ओं देवेभ्यः स्वाह्येभ्यः स्वाहा ॥

इन दो मन्त्रों से दो आज्याहुति पश्चिम दिशा द्वारस्थ कुण्ड में देवे ।

ओम् उदीच्या दिशः शालाया नमो महिम्ने स्वाहा। ओं देवेभ्यः स्वाह्येभ्यः स्वाहा ॥

इनसे उत्तर दिशास्थ वेदी में दो आज्याहुति देवे । पुनः मध्यशालास्थ वेदी के समीप जाके स्व-स्व दिशा में बैठके–

ओं ध्रुवाया दिशः शालाया नमो महिम्ने स्वाहा। ओं देवेभ्यः स्वाह्येभ्यः स्वाहा ॥

इनसे मध्य वेदी में दो आज्याहुति ।

ओम् ऊर्ध्वाया दिशः शालाया नमो महिम्ने स्वाहा । ओं देवेभ्यः स्वाह्येभ्यः स्वाहा ॥

इनसे भी दो आहुति मध्यवेदी में । और–

ओं दिशोदिशः शालाया नमो महिम्ने स्वाहा ओं देवेभ्यः स्वाह्येभ्यः स्वाहा ॥

ओं वास्तोष्पते प्रति जानीह्यस्मान्त्स्वावेशो अनमीवो भवा नः। यत्त्वेमहे प्रति तन्नो जुषस्व शं नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे स्वाहा ॥१॥

वास्तोष्पते प्रतरणो न एधि गयस्फानो गोभि-रश्वेभिरिन्दो । अजरासस्ते सख्ये स्याम पितेव पुत्रान् प्रति नो जुषस्व स्वाहा ॥२॥

वास्तोष्पते शग्मया संसदा ते सक्षीमहि रण्वया गातुमत्या । पाहि क्षेम उत योगे वरं नो यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः स्वाहा ॥३॥ ऋ० मं० ७। सू० ५४॥

अमीवहा वास्तोष्पते विश्वा रूपाण्याविशन् । सखा सुशेव एधि नः स्वाहा ॥४॥ ऋ० मं० ७। सू० ५५। मं० १॥

इन ४ चार मन्त्रों से ४ चार आज्याहुति देके, जो स्थालीपाक अर्थात् भात बनाया हो उसको दूसरे कांसे के पात्र में लेके, उस पर यथायोग्य घृत सेचन करके अपने-अपने सामने रक्खें । और पृथक्-पृथक् थोड़ा-थोड़ा लेकर–

ओम् अग्निमिन्द्रं बृहस्पतिं विश्वाँश्च देवानुपह्वये । सरस्वतीञ्च वाजीञ्च वास्तु मे दत्त वाजिनः स्वाहा ॥१॥

सर्पदेवजनान्त्सर्वान् हिमवन्तꣳ सुदर्शनम् । वसूँश्च रुद्रानादित्यानीशानं जगदैः सह । एतान्त्सर्वान् प्रपद्येहं वास्तु मे दत्त वाजिनः स्वाहा ॥२॥

पूर्वाह्णमपराह्णं चोभौ मध्यन्दिना सह । प्रदोषमर्धरात्रं च व्युष्टां देवीं महापथाम् । एतान्त्सर्वान् प्रपद्येहं वास्तु मे दत्त वाजिनः स्वाहा ॥३॥

ओं कर्तारञ्च विकर्तारं विश्वकर्माणमोषधींश्च वनस्पतीन् । एतान्त्सर्वान् प्रपद्येहं वास्तु मे दत्त वाजिनः स्वाहा ॥४॥

धातारं च विधातारं निधीनां च पतिꣳसह । एतान्त्सर्वान् प्रपद्येहं वास्तु मे दत्त वाजिनः स्वाहा ॥५॥

स्योनꣳ शिवमिदं वास्तु दत्तं ब्रह्मप्रजापती । सर्वाश्च देवताश्च स्वाहा ॥६॥

स्थालीपाक अर्थात् घृतयुक्त भात की इन ६ छः मन्त्रों से ६ छः आहुति देकर कांस्यपात्र में उदुम्बर=गूलर [और] पलाश के पत्ते, शाड्वल=तृणविशेष, गोमय, दही, मधु, घृत, कुशा और यव को लेके, उन सब वस्तुओं को मिलाकर—

ओं श्रीश्च त्वा यशश्च पूर्वे सन्धौ गोपायेताम् ॥

इस मन्त्र से पूर्व द्वार ।

यज्ञश्च त्वा दक्षिणा च दक्षिणे सन्धौ गोपयेताम् ॥

इससे दक्षिण द्वार ।

अन्नञ्च त्वा ब्राह्मणश्च पश्चिमे सन्धौ गोपायेताम् ॥

इससे पश्चिम द्वार ।

ऊर्क् च त्वा सूनृता चोत्तरे सन्धौ गोपायेताम् ॥

इससे उत्तर द्वार के समीप उनको बखेरे, और जलप्रोक्षण भी करे ।

केता च मा सुकेता च पुरस्ताद् गोपायेतामित्यग्निर्वै केताऽऽदित्यः सुकेता तौ प्रपद्ये ताभ्यां नमोऽस्तु तौ मा पुरस्ताद् गोपायेताम् ॥१॥

इससे पूर्व दिशा में परमात्मा का उपस्थान करके दक्षिण द्वार के सामने दक्षिणाभिमुख होके–

दक्षिणतो गोपायमानं च मा रक्षमाणा च दक्षिणतो गोपायेतामित्यहर्वै गोपायमानꣳ रात्री रक्षमाणा ते प्रपद्ये ताभ्यां नमोऽस्तु ते मा दक्षिणतो गोपायेताम् ॥२॥

इस प्रकार जगदीश का उपस्थान करके पश्चिम द्वार के सामने पश्चिमाभिमुख होके–

दीदिविश्च मा जागृविश्च पश्चाद् गोपायेता-मित्यन्नं वै दीदिविः प्राणो जागृविस्तौ प्रपद्ये ताभ्यां नमोऽस्तु तौ मा पश्चाद् गोपायेताम् ॥३॥

इस प्रकार पश्चिम दिशा में सर्वरक्षक परमात्मा का उपस्थान करके उत्तर दिशा में उत्तर द्वार के सामने उत्तराभिमुख खड़े रहके–

अस्वप्नश्च माऽनवद्राणश्चोत्तरतो गोपायेतामिति चन्द्रमा वा अस्वप्नो वायुरनवद्राणस्तौ प्रपद्ये ताभ्यां नमो-ऽस्तु तौ मोत्तरतो गोपायेताम् ॥४॥

धर्मस्थूणाराजꣳ श्रीसूर्यामहोरात्रे द्वारफलके । इन्द्र-स्य गृहा वसुमन्तो वरूथिनस्तानहं प्रपद्ये सह प्रजया

पशुभिस्सह । यन्मे किञ्चिदस्त्युपहूतः सर्वगणः सखा यः साधुसंमतस्तां त्वा शाले अरिष्टवीरा गृहा नः सन्तु सर्वतः ॥५॥

इस प्रकार उत्तर दिशा में सर्वाधिष्ठाता परमात्मा का उपस्थान करके, सुपात्र वेदवित् धार्मिक होता आदि सपत्नीक ब्राह्मण तथा इष्ट मित्र और सम्बन्धियों को उत्तम भोजन कराके, यथायोग्य सत्कार करके दक्षिणा दे, पुरुषों को पुरुष और स्त्रियों को स्त्री प्रसन्नतापूर्वक विदा करें । और वे जाते समय गृहपति और गृहपत्नी आदि को

'सर्वे भवन्तोऽत्राऽऽनन्दिताः सदा भूयासुः ॥'

इस प्रकार आशीर्वाद देके अपने-अपने घर को जावें।

नवशस्येष्टि और संवत्सरेष्टि

(संक्षेप में)

जब-जब नवान्न आवे, तब-तब नवशस्येष्टि और संवत्सर के आरम्भ में निम्नलिखित विधि करके । नवीन अन्न के भोजन का आरम्भ करें-

नवशस्येष्टि और **संवत्सरेष्टि** करना हो तो जिस दिन प्रसन्नता हो वही शुभ दिन जाने । घर तथा ग्राम या शहर के बाहर किसी शुद्ध खेत में यज्ञमण्डप में ईश्वरस्तुति प्रार्थनो-पासना एवं स्वस्तिवाचन, शान्तिकरण मन्त्रों के पश्चात् (स्वस्तिवाचन, शान्तिकरण के मन्त्र पृष्ठ 72 से 81 एवं दैनिक अग्निहोत्र के मन्त्र पृष्ठ 25 से 36 पर देखें) दैनिक अग्निहोत्र, आघारा-वाज्यभागाहुति, व्याहृति, पवमानाज्याहुति, अष्टाज्याहुति प्रमाणे सब विधि करके कार्यकर्त्ता नवशस्येष्टि और संवत्सरेष्टि की

निम्न मन्त्रों से आहुति दें ।

ओं पृथिवी द्यौः प्रदिशो दिशो यस्मै द्युभिरावृताः। तमिहेन्द्रमुपह्वये शिवा नः सन्तु हेतयः स्वाहा ॥१॥

ओं यन्मे किञ्चिदुपेप्सितमस्मिन् कर्मणि वृत्रहन्। तन्मे सर्वꣳ समृध्यतां जीवतः शरदः शतꣳ स्वाहा ॥२॥

ओं सम्पत्तिर्भूतिर्भूमिर्वृष्टिर्ज्यैष्ठ्यꣳ श्रैष्ठ्यꣳ श्रीः प्रजामिहावतु स्वाहा ॥ इदमिन्द्राय—इदन्न मम ॥३॥

ओं यस्या भावे वैदिकलौकिकानां भूतिर्भवति कर्मणाम् । इन्द्रपत्नीमुपह्वये सीताꣳ सा मे त्वनपायिनी भूयात् कर्मणि कर्मणि स्वाहा ॥ इदमिन्द्रपत्न्यै—इदन्न मम ॥४॥

ओम् अश्वावती गोमती सूनृतावती बिभर्त्ति या प्राणभृतो अतन्द्रिता । खलमालिनीमुर्वरामस्मिन् कर्मण्युपह्वये ध्रुवाꣳसा मे त्वनपायिनी भूयात् स्वाहा ॥ इदं सीतायै—इदन्न मम ॥५॥ [पार०कां० २। कं १७।९]

इन मन्त्रों से प्रधान होम की ५ (पांच) आज्याहुति करके—

ओं सीतायै स्वाहा ॥ ओं प्रजायै स्वाहा ॥
ओं शमायै स्वाहा ॥ ओं भूत्यै स्वाहा ॥

[तु०—पार०कां० २। कं १७।१०]

इन चार मन्त्रों से चार, और (**यदस्य०**) मन्त्र से **स्विष्टकृत्** होमाहुति एक, ऐसे ५ (पांच) स्थालीपाक की आहुति देके, यज्ञ की समाप्ति करें ।

परीक्षा में सफलता के मन्त्र

परीक्षा में सफलता के लिए प्रत्येक विद्यार्थी का कर्तव्य है कि वर्ष भर अपनी परीक्षा में लगे हुए विषयों की पुस्तकों का अत्यन्त परिश्रम के साथ अध्ययन करे और अच्छी प्रकार प्रत्येक विषय को समझे। परीक्षा स्थान पर जाकर घबराये नहीं। माता-पिता तथा गुरुजनों का कर्तव्य है, परीक्षार्थी का उत्साह वर्धनार्थ यज्ञ का आयोजन करे और परीक्षार्थी बालक को यजमान आसन पर बैठाए, ईश्वर स्तुति प्रार्थना मन्त्रों से प्रारम्भ कर सर्व यज्ञ विधि सम्पन्न करे, तत्पश्चात् गायत्री मन्त्र द्वारा तीन आहुति देने पर निम्न मन्त्रों से विशेष आहुति दें—

ओं पुनरेहि वाचस्पते देवेन मनसा सह । वसोष्पते निरमय मयेवास्तु मयिश्रुतम् ॥१॥ अथर्व० १।१।२

भावार्थ : हे वाचस्पति भगवन् गुरु देव ! आपने जो दिव्य मन से शिक्षा दी थी । आज आप द्वारा प्रदत्त वह ज्ञान मुझे पुनः स्मरण रहे । वह मुझ में स्थिर रहे । परीक्षा के समय आप द्वारा दिया गया ज्ञान मेरे काम आवे ।

ओं उपहूतो वाचस्पतिरुपास्मान् वाचस्पतिर्ह्वयताम्। संश्रुतेन गमेमहि माश्रुतेन विराधिषि ॥२॥

भावार्थ : आज मैं अपनी आत्मिक शक्ति के बल से गुरु प्रदत्त ज्ञान को पुनः बुला रहा हूं । वह ज्ञान निश्चय से मुझ में संयुक्त रहे । मैं कदापि उस ज्ञान से अलग न होऊं।

ओं मेधां मे वरुणो ददातु मेधामग्निः प्रजापतिः। मेधा मिन्द्रश्च वायुश्च मेधां धाता ददातु मे ॥३॥

यजु० ३२।१५॥

भावार्थ : हे सर्वश्रेष्ठ प्रभो ! प्रजाहितैषी, तेजस्वी, ऐश्वर्यवान् प्रेरक और सबके आधार भगवन् मुझे उत्तम बुद्धि प्रदान कीजिए। मैं आत्मसमर्पण करता हूं ।

यां मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते । तया मामद्य मेधयाऽग्ने मेधाविनं कुरु स्वाहा ॥

भावार्थ : हे अग्निरूप परमात्मदेव समूह और पितृगण विद्वज्जन जिस धारणायुक्त बुद्धि की उपासना करते हैं (प्रार्थना करते हैं)। उस मेधा से आज मुझको मेधावी, ज्ञानवान्, विद्वान् करो अर्थात् बनाओ ।

पूर्णाहुति देने पर माता-पिता अध्यापक एवं अन्य उपस्थित स्त्री-पुरुष परीक्षार्थी बालक को निम्न मन्त्र से आशीर्वाद देवें-

ओं अभिवर्धतां पयसाभि राष्ट्रेण वर्धताम् । रय्या सहस्त्रवर्चसेमौ स्तामनुपक्षितौ ॥ अथर्व० ३।७८।२॥

भावार्थ : हे परीक्षार्थी बालक ! तू ज्ञान से बढ़ यह ज्ञान रूपी दुग्ध तेरा संवर्धन करे । राष्ट्र के साथ तेरी बुद्धि हो अर्थात् तेरी यह विद्या राष्ट्र हित के लिए हो । तुम तेजस्वी बनो, इस परीक्षा में तुझे सफलता प्राप्त हो, परमपिता परमात्मा तेरा कल्याण करे और तेरे तेज में सविता की हजारों किरणें प्रकाश भरें । तत्पश्चात् पुष्प वृष्टि करें ।

ओं सत्या सन्तु अस्यकामाः, शिक्षास्ते पन्थानः सन्तु स्वस्ति स्वस्ति स्वस्ति।

❑❑❑

(आरती)

ओं जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे ।
भक्त जनों के संकट, क्षण में दूर करे ।।
जो ध्याये फल पावे, दुःख विनशे मन का ।
सुख-सम्पत्ति घर आवे, कष्ट मिटे तन का ।।
मात-पिता तुम मेरे, शरण गहूँ किसकी ।
तुम बिन और न दूजा, आस करूँ मैं जिसकी ।।
तुम पूरण परमात्मा, तुम अन्तर्यामी ।
पारब्रह्म परमेश्वर, तुम सब के स्वामी ।।
तुम करुणा के सागर, तुम पालन कर्त्ता ।
मैं सेवक तुम स्वामी, कृपा करो भर्त्ता ।।
तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपति ।
किस विधि मिलूँ दयामय तुमको मैं कुमति ।।
दीनबन्धु, दुःखहर्ता, तुम रक्षक मेरे ।
करुणा हस्त बढ़ाओ, द्वार पड़ा तेरे ।।
विषय विकार मिटाओ, पाप हरो देवा ।
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ, सन्तन की सेवा ।।

(शान्तिपाठ)

द्यौः शान्तिरन्तरिक्षꣳ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः । वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वꣳ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि ।।१८।। (यजुः० ३६।२४)

ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः ।।

***

॥ ओ३म् ॥

संगठन-सूक्त

ओ३म् सं समिद्युवसे वृषन्नग्ने विश्वान्यर्य आ ।
इळस्पदे समिध्यसे स नो वसून्या भर ॥१॥

हे प्रभो ! तुम शक्तिशाली हो बनाते सृष्टि को ।
वेद सब गाते तुम्हें हैं कीजिए धन-वृष्टि को ॥

सङ्गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम् ।
देवा भागं यथापूर्वे सं जानाना उपासते ॥२॥

प्रेम से मिलकर चलो बोलो सभी ज्ञानी बनो ।
पूर्वजों की भांति तुम कर्त्तव्य के मानी बनो ॥

समानो मन्त्रः समितिः समानी समानं मनः सह चित्तमेषाम् ।
समानं मन्त्रमभिमन्त्रये वः समानेन वो हविषा जुहोमि ॥३॥

हों विचार समान सब के चित्त मन सब एक हों ।
ज्ञान देता हूं बराबर भोग्य पा सब नेक हों ॥

समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः ।
समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति ॥४॥

हों सभी के दिल तथा संकल्प अविरोधी सदा ।
मन भरे हों प्रेम से जिससे बढ़े सुख सम्पदा ॥

मुद्रक : **वैदिक प्रेस**, कैलाशनगर, दिल्ली-३१, 22081646, 9968449771

॥ ओ३म् ॥

आर्यसमाज के दस नियम

१. सब सत्यविद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सबका आदिमूल परमेश्वर है ।

२. ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्त्ता है । उसी की उपासना करनी योग्य है ।

३. वेद सब सत्यविद्याओं का पुस्तक है । वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है ।

४. सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिये ।

५. सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहियें ।

६. संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना ।

७. सबसे प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार यथायोग्य वर्तना चाहिए ।

८. अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिये ।

९. प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में सन्तुष्ट न रहना चाहिये किन्तु सबकी उन्नति में ही अपनी उन्नति समझनी चाहिये ।

१०. सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम पालने में सब स्वतन्त्र रहें ।

धर्म अर्थ

परिचय

डॉ० कर्णदेव आर्य शास्त्री
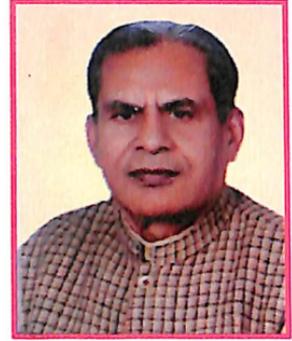
जन्म तिथि : 31 अक्टूबर 1950
माता : श्रीमती नारायणी देवी
पिता : श्री कनहीराम जी
धर्मपत्नी : श्रीमती पुष्पलता
पुत्र : आदित्य देव, **पुत्रवधू :** श्वेता देव
पुत्रियाँ : वन्दना/श्री प्रशान्त, दीप्ति/श्री जसवन्त सिंह
बहिन : कुसुम/श्री रामसिंह
निवासी : ग्राम नगला पट्टी–पो०जखेरा, जिला कासगंज, उ०प्र०
वर्त.पता : आर्यसमाज, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली–110001
शिक्षा : शास्त्री, विद्याभास्कर, साहित्याचार्य, एम.ए. (संस्कृत-हिन्दी), पी–एच०डी०
अध्यापन : चन्द्रपाल आर्य इण्टर कालेज बहजोई, मुरादाबाद, उ०प्र० ।
प्रवक्ता–देवनागरी इण्टर कालेज गुलावठी (बुलन्दशहर) उ०प्र० ।
कार्यवाहक प्राचार्य–श्रीमद्दयानन्द गुरुकुल संस्कृत महाविद्यालय, खेड़ा खुर्द, दिल्ली।

पुरोहित कार्य एवं प्रवचन–आर्यसमाज रमेश नगर, नई दिल्ली । आर्यसमाज भोगल जंगपुरा, नई दिल्ली । आर्यसमाज माडल टाउन, दिल्ली। आर्यसमाज डेरावाल नगर दिल्ली । आर्यसमाज 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली । वेद तथा वैदिक सिद्धान्तों पर यज्ञ एवं प्रवचन । दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के विशेष पर्वों पर यज्ञ–ब्रह्मा ।

सामाजिक कार्य : आर्य पुरोहित सभा (रजि०) दिल्ली प्रदेश के पूर्व उपप्रधान एवं मन्त्री। आर्यसमाज माडल टाउन में पूर्व उपमन्त्री। दिल्ली एवं नई दिल्ली के प्रतिष्ठित एवं सम्मानित परिवारों में यज्ञ तथा विवाह आदि विभिन्न संस्कारों को सम्पन्न कराना ।

सम्पादन एवं लेखन : यज्ञ तथा यज्ञविधियों पर 5 पुस्तकों का सम्पादन । आर्यसन्देश, जनज्ञान, दैनिक जागरण, हिन्दुस्तान आदि पत्र–पत्रिकाओं में विभिन्न लेख ।

सम्मान : 1. डी.ए.वी. स्कूल विकासपुरी नई दिल्ली द्वारा महर्षि वेदव्यास सम्मान ।
2. विकलांग समिति दिल्ली द्वारा सम्मान ।
3. आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली द्वारा स्वामी विद्यानन्द सरस्वती पुरस्कार से सम्मानित ।

सदस्य : 1. केन्द्र सरकार के योजना आयोग में हिन्दी सलाहकार समिति के पूर्व अवै० सदस्य
2. लोकसभा में शोध अध्येतावृत्ति समिति में मनोनीत प्रतिष्ठित एवं सम्मानित अवै० सदस्य

विशेष : सभी प्रकार के यज्ञ एवं विवाह आदि संस्कारों एवं प्रवचनों हेतु–

सम्पर्क–09810322989, 09918555863
Email : acharyakaran.shastri@gmail.com
f : shastri.karandev

काम मोक्ष